

9834H



धर्मरत्न बज्राचार्य सुरत श्री महाबिहार DH 389

३
 कृष्णानिधुना नमो नमो साहसमहासाहससाक धर्मोत्तरहासिकः कनावहासनसर्वसत्त्वा विरुद्धनवधनाभावयित्वा यथक यथक
 संयाकाननवनकसमनादवहासयित्वा नानाप्रकाशयेयुः कयीत्वा जगत्सहस्रयुद्धक्रीडीकृत्योत्तिसावदित्वा रगवतः पूजसादि मन्त्रमन्त्र
 यनिनिधयेवमाह अहोवृद्ध २ वृद्ध धर्मस्य हारनं कृत्य दत्ता अस्माकं दुर्गतीयादि धर्म वाधियत्रयायनि सायनके अथदवडाह २
 गवत्सहस्रसहस्रयुद्धक्रिमिकृत्य वदित्वा रगवतमनदवाचक ॥ रगव कनकावनवृद्धनमिसमनादवहासनद्वयनिसमनाभावयित्वा
 विमूर्तिमार्जयनि सायना अवयसगन ॥ रगवानाह ॥ वददवडा धर्मवृद्धानी रगव केनानी सयनायमानी पूज्यसंहावाभी ॥ दवा डसंम

कृष्णवृद्धा अथविमिर्गुणनला कनकनाः ॥ देवेडासम्यक् कृष्णनामयमाना वायव्यविनिश्चयः ॥ दवाडावृद्धानी रगवनामयनिमिनायस्य
 यनावृद्धानीमयमाना त्रयोवृद्धानी रगवना सयमानविनजयनालज निरुता कनाशा अस्मसंस्त्रनादवृद्धा रगवना समसमादिसमचागः
 नावृद्धा रगवना समसमयनिधनसमचागनाः ॥ कस्मादवृद्धवृद्धानी रगवाना जथाज्ञाननथसत्त्वार्थकनकेय अविनयनथासत्त्वा
 नमर्थकवनकः यथाहियायसत्त्वार्थरवतिनी हानयामि न ससयसद्धामिविमित्तिकरुवागनथगनवेनयन्नरवतिनी नदथस्थान
 विद्यनवेउसाकायदक्षिणा इहाययननाय रगवता वियु नमहना पूजा कृत्वा वदित्वा रगवतमनदवाचक ॥ सर्वसत्त्वानीहिनायक

॥ अथ यन्त्रद्वयं यन्त्रायित्वा गवाक्षमादाय वयं नानाधि धर्मलमकृता कयुर्वै कश्चिन्मन्त्रादना धर्माद्यनकासदावविहायेन ह्यः
 ॥ अथ कलननहमावित्तुदक्षिणी हनयननसाधुगवासाधुकारनहर्षयित्वा सदवसाकस्य हिनायसखायकत्रनायानागनागानां सुत्वाना
 ॥ मयायसंनिविदिमाहनाया ॥ अथ यन्त्रायित्वा यित्वा ॥ अथ यन्त्रायित्वा यित्वा ॥ अथ यन्त्रायित्वा यित्वा ॥ यना नाना
 ॥ गताना सुत्वाना नागनायित्वा मयायः मार्गविमाहो हवनी ॥ स्वर्गदवसाकतामनूयताकवात्यना नामनूत्रायासंम्यक्तं वाधियाहयश
 ॥ यित्वा ॥ अथ यन्त्रद्वयं यन्त्रायित्वा गवाक्षमादाय वयं नानाधि धर्मलमकृता कयुर्वै कश्चिन्मन्त्रादना धर्माद्यनकासदावविहायेन ह्यः

॥ अथ यन्त्रद्वयं यन्त्रायित्वा गवाक्षमादाय वयं नानाधि धर्मलमकृता कयुर्वै कश्चिन्मन्त्रादना धर्माद्यनकासदावविहायेन ह्यः
 ॥ अथ यन्त्रद्वयं यन्त्रायित्वा गवाक्षमादाय वयं नानाधि धर्मलमकृता कयुर्वै कश्चिन्मन्त्रादना धर्माद्यनकासदावविहायेन ह्यः
 ॥ अथ यन्त्रद्वयं यन्त्रायित्वा गवाक्षमादाय वयं नानाधि धर्मलमकृता कयुर्वै कश्चिन्मन्त्रादना धर्माद्यनकासदावविहायेन ह्यः
 ॥ अथ यन्त्रद्वयं यन्त्रायित्वा गवाक्षमादाय वयं नानाधि धर्मलमकृता कयुर्वै कश्चिन्मन्त्रादना धर्माद्यनकासदावविहायेन ह्यः

लङ्कायै मनुजयवन्ध्याहियन न न वदयन्नाः समन क न न वां वमय न दवान काया केत्य दं न ग गाल्यनाः समन ॥ सर्वे व थगनाधः
 मनामहिमुखवन्नि ॥ अवेवहिकारवनि ॥ सुन निव नियगाएवनि ॥ सर्वे व थगन कृतयजान श्रुतवनि ॥ यद्विनावन नाच सर्वे व थ
 ५ गन कृतयवा जून सिमा सुखमनरुवनि ॥ दव ड संक्रयना ला किकला कारु न सं व सुखमनरुवनि ॥ अथ दव डो हगव न य द क्रि नी कः
 त्यवदिते वमाह ॥ रगवान् सर्वे द्रुम नि व नी रगानी हन सुख व न नाय य थ सत्वे ॥ सर्वे द्रुम नि य थ क न भाया सत्वनरु व स मय क वा छि वा
 धगमार्ग द न य न ॥ अथ य ल रगवान् ॥ अस्मिन्निः सर्वे द्रुम नि य विहा धन हान व ड न म समा धि समा य द न सर्वे व थगन द्रुम नि य साध
 वि

न

नमो जा न जा नम मनुजमहायन ॥ साधन भद्र नायिर्न रा व न रायि न ॥ यथ र्म ना व र गा वि ज न म ना न कृतय द ल म द्रु क मा तो न नि य
 नः सुग ध न मनुज द क ला य श्राय न य जा क न नी या ॥ सर्वे ध र्म न ना ल्य म्हा व यित्वा ॥ अत्मानं हं का व न व ड का ला कं म्हा व य न ॥ न स्य क थु की
 का व न य म न स्था यि त्वा द ता द्रु का तं न व ड ल न स्था यि त्वा हं का व न यं च स चि क व ड न व ड जि द्वा ॥ या ति न र व नि व ड जि द्वा नि ॥ न न व ड
 जि द्वा र व नि म नु जा य क मा र वान् ॥ ह सु द य म ध सि न अ काल न वं लु व न स्था यि त्वा हं का व न यं च स चि क व ड का ला म ध नि वि य र व ड
 ह का र व नि ॥ सर्वे डा व ध क मा र वान् ॥ न ना न का व क ल व ना क रु या ॥ उं गृ ह्ण व ड स म य हं व मि नि वृ त्त म हा का ध न व न नि स धि या न् ॥ व ड
 २३ म १

तं धनं नृत्ता दयन् कुर्वन् मानसं गच्छन् मनुष्यवर्जिन काटनं न विस्मृता ॥ न नावजाहो स न निषर्गवर्ज न नास्ती मश्ववज माता हि वि
कृत् क्रिया ॥ उं वज्र कातानं कर्हं मृत्विचि के गुमा मिति ॥ वज्र वध इह दयसा हि नाहि सं वज्र वध स्थाया निक्षीर धान यन् ॥ उं इमि
३ ॥ अन्न न द्वा कलक वचयि ता ॥ उं वज्र कातानं कर्हं मिच्छु दि नय न धाम्नि हृदय दत्ता द क्रि न मृत्वि स त य न सर्व विद्या न ह न्या न ध ८
ना वज्रान्न न मूडा सा ह न विद्या द ह ना दि र्क कृया ॥ उं वज्रान्न न ह न द ह य व म थ कृ न ल ग हं ह ति य मृत्वि न वज्र वज्र मृत्वि ह नि र्क
वज्रान्न न मूडा ॥ न द न् वज्र न वि व ह स र्व विद्या वि नि नि ॥ मूडा य कृया स र्व व ह ह या ॥ वज्र व ह व ह मृत्वि ह ह द य य सा य स म धान

यन् ॥ वज्र न वि मूडा ॥ य सा वि न व ह र्म य नि स्या य मृत्वि व ध कृया ॥ उं वज्र इ द म ह व न र्क स वा स ह ॥ वज्र न र्क मूडा स हि न न
उ ह व ध न कृया ॥ उं ह त ह त हं ह ति ॥ वज्र मृत्वि ह य व ध त ता न व क व ग म यि ता सि न ह य वि न र्क न्या र्क म् का त न ध व य ॥
वज्र न व मूडा ॥ स स्था ध स वज्र य कृ मूडा स हि न न मूडा र्क कृया ॥ उं वज्र य कृ हं मि मि ॥ वज्र ज त न मृत्वि ह य य सा वि न र्क नि ह
य द सा वज्र य कृ मूडा ॥ वज्रा वि व न मूडा य कृ न य व्वा दि र्क व ध न हं र्क व धा मि मि ॥ इ मि मि वा वज्र मृत्वि ह य र्क न्या ध व त व ध न
न र्क नि ह य स वि मृत्वि नि व र्क वि व स य य ॥ वज्रा वि व मूडा ॥ य न वज्र या स न ना म र्क व ध य ॥ य न वज्र या न ना म र्क व ध य ॥ उं

वज्रयासुद्धीं विनि॥ वज्रमस्त्रिद्वयनवाह्यारुद्धया वज्रयासुद्धा॥ वज्रयताकयायश्चिमीदिर्निवधयन्॥ उं वज्रनिकयनजिनिनडिनि॥
वज्रवधुसुखसुखययासुद्धिनि कृतायसमाविदनिता-त्यायन्ता॥ वज्रयाताकाया॥ दिविदिशुधद्वैविद्याविदुनर्नक्यान्॥ वज्रकाः
दू नारुनीजाः दिविधः॥ वज्रकासी नूठडिनि॥ वज्रयन्मूडवमुखे दृष्टिद्वयवज्रकात्याः॥ वज्रनिरवतयादकिनादिनिवधयन्॥ उं वज्रसि तं
खववूठमडिनि॥ वज्रमस्त्रिद्वयनयवताकयाहिनयावजसिखनायाः वज्रकर्मनामधुतवधुहतायाकावदयान्॥ उं वज्रकमिनि॥ यूनन
खनयकायी॥ वज्रयाकावनहं॥ निवज्रमस्त्रिद्वयवद्वावाहवज्रसमाधायकनिष्ठाकृतावधिनानिष्ठाकविजयानामनरूनि॥ वज्रहंकाव

स्या॥ यमवमधयवज्रवाम००॥ वज्रवधनवज्रयज्ज्वंदयात्पूननवज्रवधकमिनि॥ नगावज्रवधवज्रमूडयासुर्वद्रुनियविः
साधनमधुतयूननानिष्ठादयन्॥ उं वज्रवकुं॥ वज्रमस्त्रिद्वयवद्वावाहवज्रवधनात्॥ वज्रवकनिविद्यानासुवमधुतसमाधिः
का॥ पूनयासुर्वदिशुयदकिननेयायामयित्वासुर्वमधुतनियानंरुवकि॥ माभवमुखगस्यानितिक्रमानाद्वेवागानवज्रवज्रयः
न्॥ वननसुर्वमधुतयविशरुवकि॥ ननयनक्रमिवमनुतवद्वातुमयथादिहि॥ लाघ्यादिहिवासुर्वदिशुयकमधुतकनयनं
स्या॥ पूननउं सुर्ववित्कायवाक्किरुयनामनवज्रवधनाद्वामिनि॥ नन॥ धुयधमदूयात्॥ नयथा॥ सुर्वसनीवनवजाज्जितियध

कु॥ यनस्य नसत्ता निर्यसमनया वै नयनियत्वरुदयनयनाहिसा नृमागमि नधर्मक्रान्ति काश्चा॥ उं सर्वविन्दनूरु नामहा धर्माववाध क्रान्तिया
नमिनायूजाभयसमूहसु ननसमयहंमिनि॥ नृत्त्यायामूडा म्बद्धा नर्ववदन्॥ सर्वसत्ता वाधिसत्ता नयारियूका रुवन्॥ ब्रह्म यनायना॥ ससा नय
द्विष्टागवार्थनाः उं सर्ववित्संसा नयनिष्टाग नूरु नमहाविर्यया नमिनायूजाभयसमूहसु ननसमयहं॥ मिनि॥ यष्टामूडा वद्धा सर्ववदन्॥ सर्व
सत्ताः सर्वक्रान्तिगता रुवन्॥ सर्वधर्मानविभा रू समाधिसमायष्टा रुह्ना विद्यावसिनासंयत्रा॥ सर्वविन्दनूरु नसा र्वावित्ता नैध्यानया नमिना
यूजाभयसमूहसु ननसमयहंमिनि॥ धूयमूडा म्बद्धा वदन्॥ सर्वसत्ता सर्वसाकारु नयष्टा र्ना समन्विता रुवन्॥ वरुह्यरिसंविद्याकाः

सर्वमम सित्यज्ञानकलागु नगुह्य विधिस्तु त्वदसीन सर्वक्रान्ति यावर्त नसमूहद महायष्टाया नमिनायूजाभयसमूहसु ननसमयहंमिनि
॥ दियमूडा वद्धा वदन्॥ सर्वसत्ताः सर्वयाय विगता रुवन्॥ उं सर्ववित्संसा नयनिष्टाग नूरु नमहाविर्यया नमिनायूजाभयसमूहसु ननसमयहंमिनि॥ ग
नसमयहंमिनि॥ ग नमूडा म्बद्धा वदन्॥ सर्वग धर्मानसत्ताः सर्वज्ञानविगता रुवन्॥ उं सर्वयाय विग धनासनिवजग ध्यायया नमिनायू
जाभयसमूहसु ननसमयहंमिनि॥ दससु दिक्क निस्वसर्वग धर्मानया दसुतग नृमात्मा नम धिमुखनायय विनयाथ॥ उं सर्ववित्तायनि
या नैनयूजाभयसमूहसु ननसमयहंमिनि॥ जसमाचवद्यादिसर्वक्रान्ति कासमूहसु ननगुह्य हार्वा नमधिमस्या॥ उं सर्ववित्ताक निर्यनूयूजा
न

भयसमुद्रस्य न समयहं ॥ सर्ववाधिसर्लैकासस्य यागनयाधर्मसमकामधिमूया ॥ उंसर्वविधिरुनिर्या ननयूजामयसमुद्रस्य न समयहं
मिति ॥ अत्रावस्वतावाः सर्वधर्मास्त्रागानमिहानियनिदिताका नाः ॥ धिमूया ॥ उंसर्वविद्रुक्तनिर्या ननयूजामयसमुद्रस्य न समयहं
दू मिति ॥ नवीधिसनियकालयूजाया सर्वनथागतसंयुजः मनिनिर्या नयामि ॥ अत्मानसर्ववृद्धवाधिसत्यनिर्या नमि ॥ सर्वदासर्वकालीयनिगु ॥ ३
गुमीमाहाका नूनिकानाथमहासमुद्रासिद्धि केनः ययद्वक्तु ॥ न चक्रुः नमूर्तसर्वसाधननंदकृत्य ॥ अन्ननक्रुः नमूर्तनसहावसत्वाः सर्वसो
किकताकारुनवियनि विगता हवंगु ॥ सर्वसो किकताकारुनसम्यहिसमवागता हवंगु ॥ सदेवमूर्खनसदेवसामनस्य नवृद्धा हवंगु ॥ नभा

रुमाः ॥ अन्ननयाहक्रुः ननकर्मना हवयवृद्धनचिन्नलाददक्षधर्मसधर्मजगतादिनायभात्रयसत्तावद्वदः स्वयिष्ठिना निरि ॥ अन्नन
वायीसम्यक् वाक्षेयनिनामयसम्वर्गं द्रुयान ॥ उत्यादयामियजमवनवाधिविरुयथाक्रियधिका नाथाः सभा ले द्रुगनिध्वया ॥ क्रियिधामि
सिद्धा केद्रुगतं धर्मसंगदं ॥ सत्वार्थक्रियानिने क्रयनिगुद्राम्यहं ददं ॥ वृद्धधर्म केसंदय के निन्नलागमूर्तम ॥ अद्याग भगदिश्यामिसम्वर्तव
द्वलचर्त ॥ वज्रयभभवमूद्रात्रयनिगुद्रामिगता ॥ अवायवगुहियामिमहावज्रकृतावय ॥ वगुदानीयदाश्यामिषकृतां दिनेमहावलकृवथा
रासमयक्रमनानमा ॥ सधर्मयनिगुद्रामिवाक्रुक्त क्रियानिकमहायप्रद्वननुद्धमहावाधिसमूर्तय ॥ सम्वर्तसर्वसंयुक्तायनिगुद्रामीगतः

गायत्र्या कर्म नयथा स्यात् महाकर्म कृतवया ॥ इत्यादि त्रिंशत्तय नयथा धि विरु मन्त्रं नैव कर्म सर्वसत्त्वार्थका नाना ॥ श्री गीर्ण नला नयि यमि श्रु
 कान भावया मह ॥ अनासु साना सासयि यामि सुत नृपायि यामि निरुता विनि ॥ ननः श्रु का दस हं म गुत्तं य श्रु मा नी विचि खन् ॥ दवा नागस
 ३ नाय काग धर्वा न्महा नगः ॥ एता युगाः यि क्षया याः सर्व नाग ययु र्जन ॥ सर्व यूजा ययु र्जन ॥ वृद्धा नां गून वनि नी ॥ अह द्वा द्वा २ सा धू वृद्ध ना र्कः १६
 मः सर्व द्रु मी तय नि स सा ध्व सत्त्वानी या धिया यन ॥ काम नू या हि ना दवा या ॥ अलिं यनिय ख च त्र क वरु नि म सु ता न क वा न हि ना र य न् ॥ उं वः
 जी ऋ सि नि ॥ वज्र व ध द द या ॥ अट य न् ॥ उं सर्व वि न् व ज व ध व ठ वृ व न् ॥ वजा व समू डा म्हा उं ति स व ज द द म र व गे ह द य के य इ धि नि स

वा सि धि के म य द्वा हं ह ह ह ह ह नि नि ॥ उं वरु म् वि वा ॥ सत्त्व व जी व द्वा ॥ उं सर्व वि न् ॥ ध य स र्व या य न य न य हं ॥ या या क र्म न म क् ॥ वज्र व ध द द व ज म्हा
 धिया न य न् ॥ समू क य क्म द्ध म्या न ना क य न म्या नि मि नि ॥ उं सर्व वि न् स र्व या य वि ध ध नि हं र द्वा ॥ या य वि ण ध न म्हा ॥ वज्र व ध द द य यि म ध मा म्
 र्व स यू का या य म गि न य नि क्म ना म् ॥ उं सर्व वि न् ना टा हं ॥ सत्त्व व जि म्हा ॥ उं सर्व वि स र्व वि न न वि सा ध नि हं ॥ न न ड्य अ या मि ना ह द य म धा श्रु का नः
 न व द म नु र्त्त न स्या य नि ॥ उं म न्त्र म हा मू न स्या हा ॥ उं सर्व द्रु मी तय नि सान ना जा य न था ग ना या ह न स म्हा र्क वृ द्वा य ॥ न य था ॥ उं सा ध न र स र्व या य गृ ह
 वि द्वा ह्वा हा ॥ न क म क्म न द्रु मी तय नि ण ध न म गु ल य नि य नः ॥ ॥ ह र श्रु का न म गु र्त्तं यू जा क्म ता ह द य म गु ल नि व णा न् ॥ द य म गु ल नू कः

वीरवक्त्रा विद्यानसमयहं॥ आत्मा विद्यानमकु॥ वज्रमुखिद्वयवक्त्रा मधुसूता मधुमाकनिष्ठा हसि यत्ना मूखा रुक्मिणी मूना मास त्वय रक्क कृता
 वज्रमुद्रा॥ हृदयसुतान उद्धृत मधुना सिका कर्तुं कलिना नूपा दया र्जया यात्रे रुद्रयगुक्त शुद्धिद्विक्तु कात्रयगु॥ ननः स्वकार्य समयः काः
 ३ ननचद्रमगुती सर्वविजसुमूल्यत्र विद्राहका नमकु सुद्धहं॥ उं सविनदु न्यजः हं वं हाः समयसर्व समयदाः॥ उं मूनश्महामूनयस्त्राहा॥ हनि १५
 नू वात्रयगु॥ सामानमधि॥ ननः स्वकार्य वज्रसमीरु मूजा मद्राज हं वं हाः यव लुयगु॥ यथा सुधा नथा द्रव्ययव न्यवद्वा विधि कुर्यात्॥ स्वहृदि
 हं कात्रया लनयके सुविकवर्जं गुयव शमि भक्त सं हस्य मूजाया॥ समाधुगुहिना मधु मूडो यौ॥ समधुवक्तु सखा का तागुगुती हसक॥ सावन
 ४ समयउयगु॥ वज्रवध दृष्टि हस मधु मूखसुद्धि का॥ वज्राक्षीय मूजा॥ सायवमधु न लाक्षीयस्य मूजाया॥ सायवमू धामानत्रयद्राकात्रवक्तु मूजाया १

वज्रगुली काता न जाक्षीयस्य मूजाया॥ सावनवक्तु समानामाकनिष्ठा हयउत्तरजगु॥ नन नियमयगुक्तु मधुमा वज्रउद्धिगु॥ सावनवयवगुहि त्वाकज
 यजेन कात्रयगु॥ हृदयगु॥ समागुक्षास्यसा विनमा विनिज्जेर सगु मूखा द्वा नानुगुगु मूधिसुम्यगु वक्तु वध्मादानी॥ साज्जेरी श्रद्ध दायिका॥
 ननागु र्द्वितीयो जवस्यसा विनवचना॥ वज्रमुखिद्वयवक्त्रा नज्ज्यागु र्द्वितीय मधुमा॥ यत्नकमनाना हि मूखवध्मात्रयगु॥ नवक्तु निसका वादीगुः
 सागुही वक्षिता॥ मूर्गु क्षामकटावध्मा वज्रमुखसंविनदि॥ धर्ममूजा वक्तु॥ कथयधर्ममगुत॥ यत्नज्जलमगु न धर्ममूजा विधियत॥ कर्म
 मूजा न हृदयविश्ववर्ज॥ धर्मवर्ज मधु कस्य नाना जस्य मूजाया हयवक्तु वध्मा नमूखा याज्ज थावक्तु मी॥ न जाक्षीयस्य मूजाया समाधुगुः

^६
 ववस्तिना॥ दक्रिवाह दवावदहामाख प्रधात्रिनि॥ वाममजनि उत्तर दक्रि ननयं वयन्॥ दयहसुन समिख दगका नन धनयन्॥ कर्मः
 मूडाविधियननवसं वृद्धनायिन॥ वजग आययागन धनमदासय कर्मिना॥ नातावं धमूखाद्वानृखना॥ यनिवलिताः॥ वजमूखियथागनया
 दू धूयादयसुथा॥ नर्तन्यकूसवधनक निखाम सुदूनि॥ वाहृगसि क नाग खीर खयावनायिउयन्॥ अथनः संपवक्रामिवाधिसुत्तामहास १०
 नी॥ कर्ममूडाववं धनयनूकं मनकनी॥ वजमूखिदयवद्वानृनाननसमावयन्॥ नर्तनिम धमाकू र्यायुषकातन धनयन्॥ मेधियस्यम
 डा॥ वाममूखिकीटन्य सुदक्रि न वाहयागन॥ नर्तनिम धमात्तर दगका नन धनयन्॥ अमायद निन॥ उं वजमूखिदयवद्वानृनिसुस्य

सानयन्॥ सवनी दू सस्य स धायस वीयारं जहस्यव॥ वाममूखिकीटन्य सुदक्रि ननु मादूख॥ धनयद्रथनर्थ वसवो ज्ञा कनमास्यव॥ वाम
 नाहसिनामूखिगजयूखनमादूति॥ धनयदक्रि नहसुग धहसि नमूडया॥ वाममूखिकीटन्य सुदक्रि नरवप्रकावन॥ सर्वज्ञस्य॥ वाममूखि
 हदि धर्यदक्रि नडहं लामयन्॥ वाममूखिदयवद्वानृनाननसमावयन्॥ नर्तनिम धमात्तर दगका नन धनयन्॥ अमायद निन॥ उं वजमूखिदयवद्वानृनिसुस्य
 धनयन्॥ अमृगयस्य॥ वाममूखि उन्नसायदक्रि नमूखियासगायसार्यक निष्ठा पुखी ववन्नखाणु आयनि॥ व दयस्य॥ दयहसुददिः
 दसयद्रासविकासयन्॥ अन्नायमूखा नकाखदयावस्यमूडया॥ वजमूखिदयवद्वानृनाननसमावयन्॥ वदयवस धायजतनीयस्यमू

गुणसुकेतुनलमयसर्वत्रलविशुद्धिनिष्ठादा॥ उं वज्र दृढादिनाधिर्द्धितेयम् ॥ नृणां यन्निवज्जदुग्धममृडाया गुं कानसिन्ननियन्नवजः
मनिनलस्यवन्नद्वर्जम् ॥ वज्रमसंचनुद्वर्जननुगाननरुविर्ग ॥ वज्रस्काजसर्वद्वर्जनस्यहसधिव ॥ चडाद्वज्रविद्धिनं दानवद्वसन्नः
द्विर्ग ॥ वज्रसुसमायुक्तं यदमुदामरुविर्ग ॥ अरुन्नममुत्तमस्य नवर्कवजावनिर्ग ॥ नृणां नालोयनिर्गसिंहासन्ननस्यविचमुसुत्त ॥ वः २०
काशन्नमध्ववद्वममुत्तदवनाहानी ॥ वाद्यममुत्तस्य दवनाहानयनिकाया ॥ अरुविंसक्तिचद्वममुत्तयस्य ॥ सिद्धासनायानवमुत्तममुत्त ॥ अ
कानादिद्वकानाशकन्नयहायायसन्नयुं डविर्ग ॥ अरुन्नकामाधिसमायन्नाधिचिह्नसन्नयनसत्त्वार्थदुसंयन्नमकुन्नयंरुवनि ॥ उं मू २१

महामन्नयस्वाहा ॥ अन्नममकुन्नानाधिसिंहवज्रनिवज्जदुग्धममृडाया गुं कानसिन्ननियन्नवजः
दामकुम्भदाना ॥ वज्रमुद्धयं वद्वयनिष्ठादाविकानयं ॥ वज्रमुद्धयं धर्मवज्रस्यसर्वसंसासद्धनिनाकयथुनिद्वसन्नः यथायद्वज्रमुद्धयकायम
यायाविवधिनः ॥ नृणां यन्निवज्जदुग्धममृडाया गुं कानसिन्ननियन्नवजः
नः ॥ अरुविंसक्तिचद्वममुत्तयस्य ॥ सिद्धासनायानवमुत्तममुत्त ॥ अ
उं नमः सर्वद्वर्जननियन्निष्ठादाविकानयं ॥ वज्रमुद्धयं वद्वयनिष्ठादाविकानयं ॥ वज्रमुद्धयं धर्मवज्रस्यसर्वसंसासद्धनिनाकयथुनिद्वसन्नः यथायद्वज्रमुद्धयकायम

क हृदयादिभूतैः स्यान्नित्यं च कः यद्वा च विषयं च न कः कः कः कां विना मनिधनं धर्मसत्त्वयथा स्यात्तत्तद्वदः ॥ धिक्कात्र विजनिश्च
 मिडासीयनथागनः कः ज्ञायकः सैदा दवायवाचन उत्तरं ॥ यद्वा च निविदन् मुडा स्यात्तद्वदः गगनवर्तुनिहा क्रायावामयूकः
 ध्वनिनः ॥ कीकावावजयनिहा निम्बुआसीयनथागनः ॥ धर्मसत्त्वयथा स्यात्तद्वदः कः ज्ञायकः सैदा दवायवाचन उत्तरं ॥ यद्वा च निविदन् मुडा स्यात्तद्वदः गगनवर्तुनिहा क्रायावामयूकः
 सर्वतः विषयस्य निम्बुआसीयनथागनः ॥ हं शो दीः शूः न नमः न उच्चार्य हृदयाद् मुजनि च ॥ चत्वा निहा न ह न प्रयत्नस्य च मनुता ॥ वा न्या द
 या च त्वानि कूलवर्तु ध्वनिनः निर्गयिर्न न कं विषयव ॥ न वा मूडा विषयस्य यत्तद्वदः कः ज्ञायकः सैदा दवायवाचन उत्तरं ॥ यद्वा च निविदन् मुडा स्यात्तद्वदः गगनवर्तुनिहा क्रायावामयूकः

२२

यादियादयश्च त्वानि यद्वा च मनुता ॥ चत्वा निहा न ह न प्रयत्नस्य च मनुता ॥ वा न्या द
 नययनिवाचन ॥ मनुता उत्तरं कः ज्ञायकः सैदा दवायवाचन उत्तरं ॥ यद्वा च निविदन् मुडा स्यात्तद्वदः गगनवर्तुनिहा क्रायावामयूकः
 ॥ यीतवर्तु यथा दिवा नागयूथ के द कि न म वा मन कृ छि का गृह मे न विरु विष्णु द्वि नः द्वि निर्या माय द व सि गु यो न व नृ कः स्य हः ॥ वाम ह रु क ठि व
 रु द कि न य द न न कः ॥ रु नि य वा धि स त्वा च ना सा र्या य ज ह स्य वा ॥ सि न व नृ य हा हा तं मु डा र्ज क स ध्वनिनः ॥ चत्वा निहा न ह न प्रयत्नस्य च मनुता ॥ वा न्या द
 नि न था ग न ॥ नि न यी न मि ष व नृ स्य च ध्वनिनः ॥ वाम मूडा विषयस्य यत्तद्वदः कः ज्ञायकः सैदा दवायवाचन उत्तरं ॥ यद्वा च निविदन् मुडा स्यात्तद्वदः गगनवर्तुनिहा क्रायावामयूकः

धर्मगंधहस्तिचलीगन्धमन्त्रवर्द्धं। मदनयद्विजिनहस्तगंधसंखयप्रविर्कं॥ वामहस्तकटिचक्रसर्वविर्द्धं॥ धन॥ ह्योनियसुत्रममानामसर्वक
 लयमात्रकः॥ सुटिकवर्द्धयहादियाम्बुदयप्रधानिधनः॥ वामहस्तकटिचक्रसत्त्वान्द्रव्यसातकः॥ ह्योनियगगनगजेष्टुसर्वारुचमस्तु
 ६ गः॥ निनयामिष्टवर्द्धः॥ सर्वविर्द्धविजिनगाम्बुदयद्वनक्तिहस्तयमस्तधमगजेष्टुवामहस्तकटिचक्रसत्त्वकासधन्ययत्तुर्थेष्टु रं३
 ह्योनककुब्धसत्त्वसायनियुक्तकः॥ नीलवर्द्धसंकासविनामनिधुजधनः॥ वाममुखिकटिचक्रदानिद्रुःखमात्रकः॥ यन्त्रिमहाप्रज्ञासीनः॥ यम
 स्त्वद्वमभुतायमभूमगयहानामवद्ववर्द्धविनाजिन॥ अमृतमलसंधायमकृताचलयानिना॥ वाममुखिकटिचक्रविस्तीर्णशायकः॥ द्विती

यत्रवृत्तयहानामभ्रह्मनमध्वंसिर्गं॥ सुकृत्वर्द्धनदियाम्बुदादक्रियानिना॥ यमस्तुत्रविमर्गुवाममुखिकटिह्मिना॥ ह्योनिरुद्रयात्रु निगनक
 कुवार्द्धकः॥ सर्वधर्मयुक्तस्थानम्बुदादक्रियानिना॥ कलिनानलसंधायवामवाममुखिकटिह्मिना॥ वरुधायविस्तृताचक्रातिनियराजिनः॥
 नकृत्वर्द्धयहादिया वज्रयज्जलधनिनः॥ युधर्मवृद्धयुक्तमुक्तागहनिनामकः॥ निननितवर्द्धसंकासम्बुदादक्रियानिनी॥ इत्यननीवर्द्धयुक्त
 वाममुखिकटिह्मिना॥ द्वितीयश्रुत्यानामनिधुनयसहिनः॥ कूर्डंद्रवर्द्धसंकासम्बुदादक्रियानिना॥ नलमाज्जलकादियं वाममुखिकटिः
 ह्मिनीः॥ नर्वचयनसयुक्तवाधिसत्त्वधसमकृतानामकः॥ मनुत्तनाज्योनामसमाधि॥ ॥ उंमूनश्महामूनयसाहा॥ उंनमःसर्वदुर्गः॥

नित्यसिद्धधननाशायनथागताया २६ तसम्यक् वृद्धाय ॥ न च या ॥ ३ ॥ धन २ सर्वयाय विष्णुधन ॥ ३ ॥ विष्णु ३ सर्वकर्मवचनविष्णुधन ॥ ३ ॥
 ननमकुनधीन ॥ ३ ॥ सिंहाजयमुखमायमि ॥ ३ ॥ तिदवतायात्रयु ॥ ३ ॥ मावयन् ॥ ३ ॥ नः यन्मनस्यनम ॥ ३ ॥ तमाकषयन् ॥ ३ ॥ दानयानन ॥ ३ ॥ तामकुमुदाः
 ३ समायुता ॥ ३ ॥ वज्रमुखिद्वयम्वदन् ॥ ३ ॥ निदायसायन् ॥ ३ ॥ कनि ॥ ३ ॥ र्ग्वलिद्वय ॥ ३ ॥ दानायागनमूदया ॥ ३ ॥ सर्वविन्दा ॥ ३ ॥ त्याटयहं ॥ ३ ॥ दानात्याटनमकु २६
 मूदयादनायाटयन् ॥ ३ ॥ वज्रचक्रस्यमूदयाम ॥ ३ ॥ तयलिकल्ययन् ॥ ३ ॥ सर्वविषयवकुहं ॥ ३ ॥ वाह ॥ ३ ॥ वज्रवधनवज्रद्वयविमा ॥ ३ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 यागतासर्ववृद्धसमाजयन् ॥ ३ ॥ वामद्वयकटावनसि ॥ ३ ॥ धिति ॥ ३ ॥ दक्षिणगुनाकासत्रियातावृतावयि ॥ ३ ॥ वज्रसमाजः ॥ ३ ॥ वंहा ॥ ३ ॥ प्रस्था ॥ ३ ॥ नमाणव

कितासर्वयवजसंवाययन् ॥ ३ ॥ सर्ववृद्धः समायात्रिकाकथनायुर्वरुनः ॥ ३ ॥ नना ॥ ३ ॥ रगन ॥ ३ ॥ आका ॥ ३ ॥ नदसम ॥ ३ ॥ तं चक्र ॥ ३ ॥ द्वावजयधूयक्रमकुनजय ॥ ३ ॥
 जनसि ॥ ३ ॥ नगचवानि ॥ ३ ॥ संया ॥ ३ ॥ न ॥ ३ ॥ स्वमन ॥ ३ ॥ दया ॥ ३ ॥ नना ॥ ३ ॥ र्द्यमूदया ॥ ३ ॥ र्द्यदद्यान् ॥ ३ ॥ नः ॥ ३ ॥ या ॥ ३ ॥ द्यमूदयाया ॥ ३ ॥ र्द्यदद्यान् ॥ ३ ॥ नना ॥ ३ ॥ य ॥ ३ ॥ हं ॥ ३ ॥ वज्रधूयहं ॥ ३ ॥ वज्रदियाः
 हं ॥ ३ ॥ वज्रगंधहं ॥ ३ ॥ वज्रयक्रमकुनविद्यान् ॥ ३ ॥ सार्यम ॥ ३ ॥ तसूय ॥ ३ ॥ व ॥ ३ ॥ नयन् ॥ ३ ॥ नन ॥ ३ ॥ य ॥ ३ ॥ मूदया ॥ ३ ॥ थमयू ॥ ३ ॥ वा ॥ ३ ॥ विधि ॥ ३ ॥ मूदानिव ॥ ३ ॥ द्ययन् ॥ ३ ॥ नन ॥ ३ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 मूदाविधियन् ॥ ३ ॥ नः ॥ ३ ॥ वाममूदामकु ॥ ३ ॥ नकर्ममूदामधियान् ॥ ३ ॥ ननामहा ॥ ३ ॥ मूदामकुनमहा ॥ ३ ॥ मूदावधियान् ॥ ३ ॥ नना ॥ ३ ॥ वज्रा ॥ ३ ॥ विषय ॥ ३ ॥ न ॥ ३ ॥ था ॥ ३ ॥ गतः ॥ ३ ॥ स ॥ ३ ॥ त्रिव ॥ ३ ॥ जिन
 लवन्ति ॥ ३ ॥ य ॥ ३ ॥ प्रव ॥ ३ ॥ जि ॥ ३ ॥ न ॥ ३ ॥ यि ॥ ३ ॥ ता ॥ ३ ॥ समा ॥ ३ ॥ ॥ ३ ॥ तय ॥ ३ ॥ द ॥ ३ ॥ व ॥ ३ ॥ ता ॥ ३ ॥ ॥ ३ ॥ मूनि ॥ ३ ॥ ना ॥ ३ ॥ जय ॥ ३ ॥ मुख ॥ ३ ॥ वज्रा ॥ ३ ॥ ॥ ३ ॥ नय ॥ ३ ॥ न ॥ ३ ॥ मा ॥ ३ ॥ हि ॥ ३ ॥ व ॥ ३ ॥ र्क ॥ ३ ॥ द ॥ ३ ॥ द्यान् ॥ ३ ॥ य ॥ ३ ॥ ॥ ३ ॥ हि ॥ ३ ॥ व ॥ ३ ॥ का ॥ ३ ॥ धि ॥ ३ ॥ य ॥ ३ ॥ नि ॥ ३ ॥ य ॥ ३ ॥ र्थ ॥ ३ ॥ न ॥ ३ ॥ द ॥ ३ ॥ द्यान् ॥ ३ ॥

श्रुतिवकानननी॥ उं सर्वेन थागन धूय पूजा मय समुद्र स्तन समयहं॥ उं सर्वेन थागन धूय पूजा मय समुद्र स्तन समयहं॥ उं सर्वेन थागन धूय
य पूजा मय समुद्र स्तन समयहं॥ उं सर्वेन थागन धूय पूजा मय समुद्र स्तन समयहं॥ उं सर्वेन थागन धूय पूजा मय समुद्र स्तन समयहं॥
३ उं सर्वेन थागन धूय पूजा मय समुद्र स्तन समयहं॥ नना ला स्यादिव नु धय नयु जयन्॥ वजा स्यात्तय नवज वावा नना क्रस्यु वव नु मु निरु यन् २३
॥ ननः प्रसमा वल्य समिग सा न धनि नः क नू मास का जगति दुःख हा ननः प्रस न सर्वे गु नी सि धि दायि न प्रस मा न ला सम व ला य ध मि नः गग ल स
माय म गग न वि द न॥ गून स स नू क नि क य सा मा क॥ मूढ स ल धा नु व न सि धि दायि य॥ वि ग ना य म प्र प्र स म न सि धि य॥ न न ना म ला क नू न व ग ना

धियाय नि धन सि धि व नि धा ध ध ल ना॥ जगत्त थ सा ध न य ना स मा नि नि सर्ग न सि वा च नि म हा द या स नी॥ न नि वा ध नी क नू न वा चि का व ला॥ वः
ज जि ला क व स सि धि दायि का॥ प्र सि न मि न प्र स मा दि ना ज ना सु ग ति ग न थ वि प्र हा स ध र्म न प्रि स म या ग सि धि व न दा द नु मा॥ व न दान ना सु ग ति
ना ज ना स दा॥ ल क न ना वि ल क व न सि धि दायि का॥ ॥ सु ग ना वि य ध ग ति न प्र ना र ना॥ ॥ सर्वे गु जि द्वा न न म र व न ना न य हा न मः
धि म य ना॥ व ज र य न ध न मु नि क र य न॥ न ना द न स दि नू सर्वे न था ग न वा धि स ल्वा ला दि क ला का र न वा द द व ना थ सर्वे पू जा र व ति वि धि
स्य क न न स हि र्द द या न॥ सु वा द ग म था मा य व हा न॥ आ दो स ना न ना दि न व द ना क र य न या य न र य ने कि सा क वि ज य मू ड न गु न ना दि सः

मविर्गं॥सर्वथायमयात्रिलोकधनुमलषण॥शक्येमुद्धनवध्विदिनासनानि॥यत्नादिमज्जानिसूर्याग्निगानि॥आदिमर्कः॥निगसर्वयगउ
 मानेऽयक्रान्तममिगवमुसाहर्गं॥उंसधनखादिउदकनक्रानयन्॥गिरुर्ववमर्ल॥उंककनीखादिमकुनक्रानयन्यकगया॥उंसलशखा
 द्दिमकुनक्रानयत्सर्वगधन्॥उंस्रमायवन्नाखादिमकुनक्रानयन्॥नीजगाविद॥उंस्रमनजूमनखादिमकुनक्रानयन्॥मद्यमूर्म॥उंस्र
 ध्यशखादिमकुलदकक्रानयन्॥दकक्रानयनः॥यूनमद्रुतगन्नायारिविक्कर्मार्ग॥धनकुरुयी॥ध्यादयाधनुविधमकुहसुमागमिदकू
 कुरुयहामयकगः॥अनृत्यननसत्तामयायगनिसुंरिर्गं हामयत्समानः॥यायववन्धनयः॥एगद्विलसमाकीकेनाजासवयमिगोः॥नि

२३

लकूअवतदादिसमिधसक॥धया॥अथायिगुदमानि॥यथायूष्मात्रथाकूत्रुर्गेनसम्यद्यगकीत्यंसत्तानाकसखावहमिनि॥ ॥कर्म
 जज्जिनामसमाधि॥ ॥गन्निवसकूयसगिगकुर्नत्रादःखादिमर्कःससखिगषसर्वसत्वहितक्राननाःसगनवखगार्कः॥उंसः
 हिनामहायससिदवान्नाकाइनकेयूनामयनिहज्जसनिगधगनयूजाया॥म्यत्रसूतदवगनाउयादिगत्रलादिवनानाविविधयस्यध्रयग
 ध्रवसूद्रुध्रजयनाकारिजनकाहिचखरिर्गं॥वकुत्रलववादिहिध्रयत्रियूत्रितकूबीकिसा॥नदनवनकनामहाययर्गं॥अथरुगवान्
 वजयानिवाधिसत्वमहासत्वहगवना॥ध्विखाननमकुकल्यत्राज्जकूना॥कल्यमहाखगू॥विनासनीखाययहयन्॥वज्रमूत्रात्यः॥ध्रयधियनवन

दनमनिसा नय नम्या ॥ सर्वो वन विसाधना ॥ वरु नाम समाधि समाय यं ॥ इमं नित्य विसाधन नाम सद्दया नि वार्या ॥ उं सर्वयाय दहन वज्र हं हं ॥ उं स
 र्वयाय वि साधन वज्र हं हं ॥ उं सर्वक मा वन भा रि निर सि क न हं हं ॥ उं यं वि ना सय व न ना नि हं हं ॥ उं दं वि साध य व न ना नि हं हं ॥ उं क न
 २ ध क २ ह न २ ह न वि न ना नि हं हं ॥ उं म स व श य स न व न ना नि हं हं ॥ उं हं हं स र्व द्वि द्व न ना नि हं हं ॥ उं ह न २ स र्व व न ना नि हं हं ॥ उं
 न २ स र्व व न ना नि हं हं ॥ उं द्वि २ श वि ड व २ स र्व या य व न ना नि हं हं ॥ उं द ह २ स र्व न व क ग ति ह न हं हं ॥ उं य व २ य न ग ति न हं हं ॥
 उं म थ २ स र्व नित्य ग ति ह न हं हं ॥ न न स र्व मी य क न ना न रा व य न ॥ उं स र्व या य वि सा ध नि ध म २ ध य य हं हं ॥ उं स र्व द्रु म ति वि सा ध नि यू य

२०

वि सा धि नि हं हं ॥ उं स र्व या य वि सा ध नि ह न व त क ति हं हं ॥ उं स र्व या य ग ति ग ध ना स नि हं हं ॥ उं न न क ग ति क र्ष नि हं हं ॥ उं स र्व न व
 क र्ष ह न नि हं हं ॥ उं स र्व या य ग ति ग ह न वि ना ण नि हं हं ॥ न ना म भु ल म हा य न ॥ त्र का न व नु म भु ल य श र्क व न म हा वि र्ग ॥ ना रि न मि क सं य क
 ॥ अ य न ना व नि नि र्क र्सी ति ख न ना लो ण य धि य नु म्नि ति ख न ॥ न ना वि ना ग ना व र्वा क य नि म हा व त ॥ ए व ना २ रि र्सी ति ख न ध क र्क र्क स
 द क्रि ल न ज या र्क्षी य व म ना वि ड य ति ख न ॥ न जा ग्रा सि ध्या ग्री या सि ना न य नु लो ण र्क वि कि रि न नै व वा च यी नै य र्णी वि ध्वं स क ति ख न ॥ व नु न सं व नु
 हा र्क र्क ना व नै सा र्नी ॥ वि नि ण ह्ना स या स म्हा ट य भू था य नि याः स र्व कान यू य द या त्र याः न न ग ध ना दि ना स का य म नू न य य न ॥ व जा च य

ॐ यन्मिदं ॥ ॐ ह्रूं वं हं ॥ रागव न्निह क न्नी क इ व्वा हा ॥ न्तिसर्वदत्ता कर्षयन् ॥ न त्थ व य वा ॥ विविक्ताः सर्वद्रुगतिस्तु विमुक्ताः ॥ स्वर्गसाधारणमि
 दं ॥ यत्तु सर्वसिद्धिदायि सिद्धिनि ॥ सम्यक् वाधि लो व म्या य न ॥ यत्तु व न् सर्वक म्मानि कृत्वा नि ॥ सर्वनायति ह न्ना र्त्वा नि ॥ ॐ मार्क न न सर्वक लय
 ६ दाद न मा कृत्वा नि ॥ कज्या नि ह्ना क न न सर्वक म्मानि कृत्वा नि ॥ अ न क क लो वि धि ना मि सर्व सा ध का र्त्वा नि ॥ द वा न्ना ग य क्ता न्ना क्ता सां दि ॥ ग वि वी स र्त्वा
 न नी ॥ सर्वद्रु म्म ति य सा दि क ॥ म ति त्रि य ज य दा मा रि य क ॥ सर्वद्रु म्म ति य म्म क्ति र्त्वा नि ॥ अथ रागवान् वरु ध नः ॥ सिंहा व ला कि न न राग व ति य र्त्वा
 म व ला क्त्वा य न म्म न द वा न् ॥ राग व न् य न म मू डा ल क्त्वा न म्म र्त्वा स र्त्वा य क न्ना व द न्ना ग वि र्त्वा न सर्वा ज्ञा ना धि क्ष नं कृत्वा नि ॥ समा धि क्ष न ला ना

ॐ ह्रूं वं हं ॥ रागव न्निह क न्नी क इ व्वा हा ॥ न्तिसर्वदत्ता कर्षयन् ॥ न त्थ व य वा ॥ विविक्ताः सर्वद्रुगतिस्तु विमुक्ताः ॥ स्वर्गसाधारणमि
 कृत्वा मध्यमाहु लिस्त्रिधा जयदि न्द्रु क क ल स म य मू डा ॥ वा म ह्ना मि मु क्तान म्म ल्मा य रि त्वा ग या य नि द जि न स्ता व हा य्वा न्द्रु व द र्प मा कृ यि त्वा नि
 वि क्र या दि य न्ना ग न क ल स मा धि मू डा स मा य य ॥ ना म व य त्रि य य न्ना न्द्रु ज्वा र्त्वा यि त्वा क नि र्त्वा नि ॥ अथ रागवान् वरु ध नः ॥ सिंहा व ला कि न न राग व ति य र्त्वा
 मू डा ॥ यत्तु ॐ ह्रूं वं हं ॥ रागव न्निह क न्नी क इ व्वा हा ॥ न्तिसर्वदत्ता कर्षयन् ॥ न त्थ व य वा ॥ विविक्ताः सर्वद्रुगतिस्तु विमुक्ताः ॥ स्वर्गसाधारणमि
 व या दि य म्म ज या नि यान य व क मू डा ॥ त स्ता न व क नि र्त्वा नि ॥ अथ रागवान् वरु ध नः ॥ सिंहा व ला कि न न राग व ति य र्त्वा

नरुसु नवगर्जनामिका नला कनक र्यादियमहिषक मूडा ॥ क न्यसाहु हयथकयथकयाजयित्वा ॥ यः ॥ यः ॥ नितासर्वयहनमूडा ॥ वामहस्तु नथेवय
वरुता ॥ सर्वकर्ममूडा ॥ ॐ ॥ लवद्वक्रयादधूयमूडा ॥ नस्तु नका ॥ क्रया लुथमूडा ॥ नस्तु नवाहु हयसुर्य कावन धनयन ॥ दिवमूडा सोवर्ष खाका
नवधममूडया ॥ नामवयसा निता नानयनतिमूडा ॥ नस्तु यवमधमादयनः ॥ यवपादयनमूडया ॥ वज्रव धनमधमादयम ध्वषवरुसक सास ॥ २॥
वैकुलीः ॥ यसा नयादिकननमूडा ॥ नस्तु नवक न्यः ॥ हयमा हर्ष विधंसनमूडाया ॥ सेवाजे लिः ॥ याका नागजा नासिमूडा ॥ नामवा श्रीवस्मन
गमयन् ॥ सीता नयनमूडा वज्रव धनसांगु हयगुह्य नाकासनवद्वाह मयचक्रमूडा वज्रव धनर्ज निहयवजाकासनम र्क थावलाकावाः

दत्तासेवा ॥ यसा काला नया श्रीवासु र्थे वकर्ज निहयवज्रद्वयसखीहु लीवद्वाकाका नाः ॥ क्रया द्विजयाद क्रि ॥ नव लदा वामना रयदाना नथागति ॥
वज्रव धनर्ज निहयवजाकार्क र्यान् ॥ वज्रमूडा ॥ नस्तु नव दक्षिण नर्ज गाहु हयसि सव नेरुका नासच ॥ सेवाग्रह हयस्यारिता साधूमन ॥ सेवम
ध्वर्यावला ॥ नस्तु नवाहु लययलाका नासु जसामवाही वासा यलकुमुडा ॥ नामवायनः ॥ हययका समयमूडा ॥ सेवयद्राका नायद्रावाय ह हय
गसामवव लायाका नाक्र्यान् ॥ ॥ नामवयन का नाजिद्रा से वाययसा हिन नका ॥ सेवाग्रहः ॥ क्रि ॥ नायका से वायर्न विहयका से वध्व ॥ नस्तु न
वकर्ज निहयर्द्रा क्रि ॥ नासा ॥ सेवाग्रह नायासा ॥ सेवाग्रह नायासा ॥ नामवा वावयन् सावः ॥ दिवक नाय विनि ॥ अथखनूतगवान् वज्रयानि ॥

सप्रवृत्तानिधिसुनिविधिसिगन्धर्वनाथप्रथमगवाच्यनवयिप्रभायीयागहनसर्वविजनविनाशनिनामसमाधिसमायद्यमांसर्वमथा
 गहनदयधननाःसाहदयानिप्रवाचय॥३॥अमाद्यनिहगसर्वविजनविनाशनिहव॥३॥असीताधिकमागयीसर्वयमांसाकधगुष्ठा
 दू कथ्यकथ्यकामिगुःबालिनःयत्तलिनःसस्यचलिनःरुहिनःयद्धहिनःसंयद्धहिनःअनकायाप्रयाणानिलाकसंहयगस्या॥कथेवैषामं ३॥
 सुसंतवनि॥चक्रुःसुकेकुदार्जःचक्रुःवाधसमवित्तः॥चक्रुःसावर्गस्यैकत्रमिनिन्यहसंयूनः॥गस्याहंनचनातत्या॥चक्रुःमगुलसूरुर्म॥
 चक्रुःदावसमायूकत्राहमगुलसूरुर्म॥नस्यामभुलिखनीर्थवजयानिमहावरा॥वजयन्भुवनसोम्ययूद्धद्रुसिगाननायवदानमधरा

गयल्लिखयक्रास्यनायका॥दक्षिणनलिखननलयनिमनासजारुम॥३॥अमाद्यस्यलिखदात्मदावसंवक्रुवाहिकृतावावाज्जलिखत्सर्वम
 थागाना॥चक्रुःमगुलसकासासर्वाननराखिगाना॥वददाहयहसामुवजयर्थकससिधमाना॥कोनरागप्रसर्वयुलस्याध्यादयसुथा॥दास
 यानाग्नकलखाः॥धकाकाधायवायनःगनध्यविषाधयथागाआकर्षलकुदेवनाः॥३॥वृंहं॥रागवन्दिस्मयकनअगननार्थयूजयि
 त्वासमाकृत्ययसयसुहनाया॥मूल्याप्रप्रहयानिवा॥३॥वजसमयहं॥वजननलेविषद्वयवलयडनकवाठिता॥यूयमासासिनावायि
 क्रययलमगुलगी॥३॥यनिहवजहं॥नतःसमयधयी॥३॥अवजसमयहं॥ननाअननाक्यागयवज॥३॥वजहासागुद्याठयहं॥ननाअननः

मध्वनार्थकथेवचःदिगयातामुखदिग्गलहाययत्यननाद्वयं॥आदिहमन्नाहय्यंनु॥दासयातामर्थेवच॥बनश्वाहय गासर्वान्युजयन्॥
 सर्वयुजया॥नगश्च वसयस्त्रिपान॥यविद्यसुयभवन्॥अहिषिक्यकल्लेचःदिक्कयासाहिगतिने॥ननादयाद्वयक॥साधनामाहिनेषिनः
 २॥सिध्वननविज्ञाताश्च॥दिक्कयातासदिगारिनाःअथनःसंगुस्या॥अवमाह॥यकश्चिह्नगवना॥नाजाकृष्टियाम्हाहिषिक॥अनलसुसंयति
 स्थामिः॥कृषकगृहदन्तवाधः॥कृतपूजावाःकृतद्रुहितावा॥नस्यावर्यलगवान्॥सर्वगवन्नगवन्नगुर्किं संविधस्यामः॥यननाकाश्चवमदयि
 यामशाकातनकातंवर्षयिष्यामः॥नस्ययूष्यतानिवनिष्यामः॥अथजमानाहाधर्मनाजाह्वगवर्गंयनमोठमाह॥अहंमरुगवर्गंयमदायहा

३०

अयुददामिः॥अस्माकानमतनानियमिवाधयामि॥नेषस्यामहा नाकसाधियानिअवमाहा॥अहंलगवन्नस्यनाहा॥नाजयूगस्यवाङ्मनःकृष्टियः
 स्यवः॥नबन्धुवामनूययून॥याचिनयनयिन्नावत्यः॥ननाकसहायीदकंनाकावादिमूह्ययादिकनिष्यामि॥सर्वदानकावन्नगुर्किं कविष्य
 मि॥अथवन्ननामहा नाज्जअवमाह॥अहंलगवन्नस्यनाहा॥सर्वदासर्वकसर्वविषययनियानयामि॥आत्मनकाश्चकनिष्यामि॥नयादिवनिः
 द्यादयिष्यामि॥नागदावानितनययदामिः॥विषाणनिष्कृतासृजामि॥सर्वकानमसन्निचयमिवाधयामि॥अथवायूयाधियनिअवमाहः॥
 अहमयिरुगवानस्यमहासुतस्यसर्वदा॥वायूर्यनासृजामि॥नाकावन्नक्षत्रासृजामि॥सर्वस्ययूष्यस्तुतिवःयनिनिष्यादयामि॥सर्व

हाः॥यथा नृपकथयथा वज्रवृक्षवृक्षदस्य न॥ननाहिरिक्कलयन।कलसाद्यतिमकीर्ण॥ननःसर्वसुदयारु।दवानाहुयथास्थिर्नः।लक्ष्म
र्कदिलर्कवा।रुतास्यवाम्नायिर्न॥साधयंसाधकसुखमिन्द्रनादिसुदाहर्म॥नकलिआदिवृक्षान॥अथवावज्रयानिर्न॥गृह्णथगनवायिस
३ धरुवनवेरुक्॥साधयत्साधकसुखी॥निर्णसर्वदवीयथावदनिः॥अहं नृपनिर्ननादवाःगत्वावदयनधुवा॥स्थितलयाकिंदि।नदास्थामः ४१
यथासुखी॥रुदङ्गनिविष्ट।यनवादास्थमनवर्न॥ननामावंनमनु।रुवरीसिद्धिदुदवना।वसन्सायनीदियी।मनुधननुश्वगमी।गुनिकावाः
अदयादि।यावन्मनेषिभामिनि॥अथमहेश्वनादया॥रुगवर्नयनियत्येवमाहुःयनरुगवन्सुनालोकिर्क॥लकाह्वमभुत्यविसकि

॥नवीमहमृगवन्सर्वदवींस्वीववनानिविधयामि॥सुगमार्गश्चदभयामः॥सुगमिर्गश्चसयामः॥निसानमार्गश्चदर्भयामः॥निवासमा
र्गश्चदभयामः॥वृद्धत्वंचदर्भयामः॥अथायमार्गश्चदर्भयामः॥सर्वधर्ममार्गश्चदर्भयामः॥अनावबनश्चमार्गदर्भयामः॥विवेकमार्गदर्भयामः॥वि
विक्रमार्गश्चदर्भयामः॥वाधिसत्त्वश्चदर्भयामः॥यहायामार्गश्चदर्भयामः॥निकृष्टमार्गश्चदर्भयामः॥वज्रधनत्वंचदर्भयामः॥॥नि॥सर्वदासर्व
रूपयूःनकाववनरुकिं कलियामिः।नगवनिगमज्जनदैयेनाह॥वाहवाजधानिक्रनक्रयिथामः॥विषयदभयमधावश्चनक्रयिथामः॥वाश्च
क्रदास्थामः॥याकनाञ्जस्यवाजट्टद्विद्वन्निथामः॥नकवाद्यदिनियरुणीयकुरुथः।सुगमत्यवानलक्।वकवली कदास्थामः॥संशयनः॥नक

३ वायविगजा नाज नाम नथागन ॥ यं का न ह दय न स्या ॥ ग ना क ज या नि द्वि का न ह दय ॥ वाम न ॥ का रु ज का न ह दय ॥ द क्रि ॥ वां का स्य ग ॥ उं का न ह द
 य ॥ य र्ग र्ग दय नाम आ या व ला कि नं न व जी का न ह दय ॥ न था ग न स्य म नु लः वि द्या क्श क ल म स्य ॥ व क्श स्य हि म गि ना ॥ सा र्व क मि क का
 न्ना ना रि म ना न ध्या दि र्क स्या य नू ॥ पू जा दि र्क स र्व द्वा ल या ल न व च न नः सं य वि स्य स्य म कि ॥ आ क ष य त्ग न र्म ॥ स य न ह य धः वा वि विः ६ ३
 श या स ह ॥ वि द्या न्ध स ग न वाम द्या ल ल स्याः ॥ न नः ॥ आ सा नं मा रि वि क्श य र्ग न नि व न न स ह र्ज य नू ॥ न था ग न सं म र्ग य न्थ हि ॥ व ज ध नः
 य वि ला कि नं न व नः वा य वा स्य न र्ग य नि व र्ग ॥ य दा स मा हि न न दाम न साः स र्व क र्म न स म था व नि ॥ न नः ॥ नि य्या च व न य ॥ व ज ध न मू द या

स्य हि मा न मू द या द य नू ॥ उं व ज ध न व ल वि न य न ध न वि न न था ग न य म या नि क म न था ग न स म य न न का र्द ॥ न न ॥ न न न क य न य नू ॥ उं न
 था ग न य नि क ह ॥ स म य स ल ॥ न न क य मा र या ॥ व ज हि वि क्श य नू ॥ उं म र्ग न था ग ना रि वि क्श व ज ध ना हा य य र्ग ॥ उं व ज व ज हि वि क्श र्गः
 इ ॥ उं व ज न ल हि वि क्श ॥ उं व ज य ना रि वि क्श र्ग ॥ उं क र्मा वि क्श हि वि क्श ॥ उं क र्ग ॥ न नः स म य नि न न य नि स्या ॥ वा वि वि र्ग स म नू
 यानि न क र्म स्या ॥ अ द ह न व वा ह न नू ॥ य न व च न व न ॥ ना च व क्श व हि र्ग ॥ गु न नि न न सी क र्ग ॥ यि क्श य नू ल य न ॥ अ न व र्ग यि क्श
 क्रि या ॥ नाम मा वा य व जि नी ॥ स र्व मू दान नि द व ॥ द व ना क्श यि द दा च न ॥ नि द द दि मा हा साः सि य न या धि र्ग व शान मा ल य द व ना द्या यः मू

वाद्यनी॥ गत्येव वाद्यदवाना॥ लखदह सादिकं॥ योनाम नधनारु लाऽनस्मनः सगानि सास्त्रं॥ कुर्यान् योऽर्थं कर्म॥ यस्मात्तथा गद्विर्गं॥ अ
 यूना कानि साख्यद्वयनस्य दहिना॥ ॥ ननः कुर्यादवसा कर्महिनायनम्॥ द्विहर्षं च गुरुकु॥ द्वा कुरु भुवनसाद्विर्गं॥ हस्तवान
 ३ स्थमध्वनु॥ सलिरव नलममूजक॥ नस्यायलिरथाः सनयनधनू नवच॥ समना चलिरथा वाय॥ ससुवन नक्रवर्धकं॥ वाद्यनसुह दवास्या॥ कुर्या ६०
 लकुरुनसदा॥ स्मृत्वानस्यसुलस्या॥ नक्रा चनरुविर्गं॥ नक्रा यूप्यामूजश्चायि॥ हलकसुधनुर्कं॥ हवनस्य दवाद्युगमिह नं कं कर्मः न कचदः
 नरुहिया॥ सचनिरु न नदसाशा॥ नस्यद्रुविनासाया॥ अरिचानसमानरुगु॥ नद्या दुरुकिहर्गं सुन थगमी॥ कृत्वाका नये यूके॥ मध्व वजनवा

लकी॥ लिनुन के वनाभदीः द्वा वि लोचकजवि॥ दनुमूजकिहर्गं लाके॥ विजयनसुविर्कं॥ कालय द्वा कनविाया॥ क्रियुर्गं यववचन॥ कनसाभ
 दिहृमाभ्या॥ नेवा द्यानस्यययदहर्गु॥ मासा नधिनसयूहनाकया ला आयिसर्वनशा॥ ननः द्वा वनधनः कधनि लाकविजयि स्वयः सवयायादि
 विद्याना॥ सयवरु स्यदहिनी॥ ननाऽसादनयायासा निविद्युश्चनसुर्वी॥ सव्रलाकगुमानूया॥ यावले लाकधनुषू॥ अनेनेवकमनास॥ कुर्याः
 ऊर्मिनिहहिनी॥ नना सुयेवस्यन थाः मुदिनस्य कायनन्ति॥ अन्धानयिवक मीनियथा कुरु॥ ननसं स्यदनक्रिय॥ सत्वाना चसुखावहमिति॥
 अथवसादया दवाः सहस्रमनसा रगवं नमस्येवमाह॥ यनरुगवन्नयायाययनानी॥ सत्वानामथायहिनायसुखायनः कत्यनजलिविषयः

किलिवाययथि॥ किम्यूनयथानिदिस्मविकल्ययनः कविथिनि॥ वयवीकादयादवास्तुस्य कनयूगस्य वा कनद्रिगुवा॥ हनवत्यवियाः
 लयिथामः यथ नजैव नजयूगवाः नजमाथावायथा॥ यथीगुमजुतर्हयिथिनि॥ नस्य नजकृद्विकविथामः विरिदभा नजनयनिवाने
 इ नस्यादिनकाकृकविथामः तद्दधनधन्यसमृद्धिः कविथामः किम्यूनयथानिकासम्यदकृकविथामः प्राद्विकृस्मि स कृस्मि कृकृ
 मकृकविथामः यथैकं कृत्य नजः सार्धध्वजवनायिनाकृत्वा॥ नगननिगमादिष्वयवलयन्॥ सूर्यवायुगृहद्विस्मि स्मध्ववनायिरुक्म
 त्वाः सर्वयमनिगमनगनादिसुममयन्॥ सर्वस्वययुदवकृनमस्यति॥ नस्यमहासत्त्वयदहस्याम॥ हत्यतनयनवायस्यवयिथिनिः॥

नहुगवानुवजयानिः सूर्यवमवसास्मिर्देः कायवजसत्त्वयान॥ वतस्मिन् निमन्थामः सूर्यववजं वा॥ वजसत्त्वसमकृतुः॥ सवसा
 यनिप्रविकः कृत्य नजयनविहवतिमन्थामः॥ सर्वगन्धगनाश्च सूर्यविवात्रादिवन् निमन्थामः॥ नकृयवियदसत्रेखरुमन्थाः य
 जयामावद्वयामः॥ न्निमन्थामः॥ यथनकृत्यै नोयचरिथिनि॥ वजाचार्यमहागयाः नस्यवयं वकादयादवास्तु ह्यगवमन्थकनायनिस्
 थामः॥ किद्वनतनायनिस्मः॥ सर्वस्वकनीथामः॥ सर्वहिंस्रसंस्कृतीथामः॥ सर्वसिद्धिः कृत्यथामः॥ संक्रयश्चरुगवकृत्य॥ पादानिसे
 नसाध्वनयामाहगवन्पूजयामाः॥ हगवकृत्य पृथग्भनूगदामः॥ यरुगवन्सत्त्वामगुलशिषिक॥ सुस्माकृत्यवितिमन्थामः॥ वजयानिनि

निमन्त्रामः वज्रसुतनिमन्त्रामः॥ महासुखसमकुलः॥ निमन्त्रामः॥ नथगनं निमन्त्रामः॥ अथलगवान् वज्रयानि॥ सुखं आदिदवा
 नवमाह॥ साधुसाधुवद्वा दयादवाः यनधर्ममेव नवनेवी॥ तुनीयनिहं कृन्त॥ सुसाधुयुनिययधमिनि॥ अथलगवान् वज्रयानिः सर्वमणः
 ३ विद्यामहदयं॥ इह वनं लभ्यस्व दयामलायन॥ उं हूं इं वज्रयानिहं विनिहूं॥ उं हूं॥ उं वज्रहं रुहं॥ उं इह वज्रहं॥ उं वज्रहं॥ उं वज्रः
 मुखा॥ अथ लभ्यते लहवनि॥ मन्त्रं लभ्यते वलित्वा स्वामि॥ वज्रयानि समातिर्यन्॥ अथवा वज्रसुतकु॥ समकुलमहासुखं॥ यूनगा वज्रयानि
 कु॥ दकिनं वज्रयानिनी॥ यन्मिभयमयानिनी॥ लखविषयानि कुवाहन॥ वाहनं मन्त्रुति॥ वसुसर्ववृद्धानि वधयन्॥ नस्यवाद्युसुखाखसं

६८

लिख्यथा कर्म॥ नन वाक्यलिखितं॥ भोगियादिमहाकुमान्॥ नद्वाद्यु लिखितं॥ नद्वादिभूनिनकथा॥ वद्वादिभूनिनकथा॥ स
 ख्यायकुयानिना॥ यहनं कृन्तुसुखं॥ दानामयि जाजिनी॥ दिगला कया लाना॥ नलिखितं लिमं॥ वाद्यनकुयानादिन्यमा॥ दान
 दानं लयेवायि॥ वादिनं वृन्तुदहस॥ यस्मान्नामं लं लिखितं॥ कृन्तुयक्रियथासाकमं लं नविनृधन॥ यक्रमीमथवासुयमी॥ यक्रमी
 र्णी विख्यन॥ सम्यक्जिनमं॥ अथवा सनाहयान्॥ लोखमं लयामदिगर्ग॥ लक्रययुधं मृदयनवि वसुनं॥ ननामं लविन्यासु
 नसायनि कल्ययन्॥ मन्त्रं वक्रादिनी कृन्तुमन्त्रं यन्तु॥ मन्त्रं वक्रादिनी कृन्तुमन्त्रं यन्तु॥ मन्त्रं वक्रादिनी कृन्तुमन्त्रं यन्तु॥ मन्त्रं वक्रादिनी कृन्तुमन्त्रं यन्तु॥

धनः शुचिः सहसि र्गुत्रधिमा ॥ नागद्वलता निर्वर्त ॥ संयनिकत्तु सप्त ॥ यदगममुत्तसु ॥ महाकाधिरुजयनयो क्रिगगद्वता विना ॥
 मध्याधिवासनकुर्यात् ॥ कृता नीहयन ॥ मधुलाधियमकनः सर्वकर्माभिका नयन् ॥ गधमउत्तर्कद्वलाः सधिन्या द्वादभमुत्त ॥ सयुक्तका
 ३ निनील ॥ जयलुत्तर्कद्वला विद्याया ॥ दवना ननु यभन् ॥ महानात्रामवाधियाः द्वादय ॥ नयथा र्गः गंधयूयादिपूजनं द्वादला ॥ वलि
 द्वादला ॥ धूपकवाहिनः नना र्हिमकुर्या यहायकंदनन विमिश्रा नो जे कमकर्त ॥ हयसुधसूज नले ॥ विद्या नाजदसा कृता ॥
 रुक्मवज कूलविद्या नाजामहद्विकः ॥ युकचगु र्हिर्ह का नयव ॥ सर्वकर्मसु ॥ कूलययू सामान्यः ॥ कोधवा मृगकूलिः सर्वविशः

वानासाया ॥ गुच्छकाधियला विनः ॥ सर्वकर्मिक मधुना ॥ मध्यागनः नना र्हयन् ॥ योक्तु वा यिगे नवा ॥ धूपनन धूपयदयन् ॥ अरिक्कायक
 लसंः सर्ववर्ग दिगंयुक्त ॥ काकनायमनि क्रिया ॥ विद्या नाहिरिमनिगं ॥ अधिवास यद्विद्वीव ॥ दत्ताय द्वादविना ॥ कूसमानि क्रियाः धूपन
 नाधिवासयन् ॥ अस्मदनि निरुध्वा र्गः नस्यसंयक्त्वा निजयवृद्ध ॥ ननाहियक कृ विनः पूनजयन मधुल ॥ सिथानीगु र्गना ॥ मजे स्याउर
 नामूर्वी ॥ दनका र्हिनो दद्यात् ॥ दासिनी नायथ कर्मी ॥ स्वादययामूखानु निथा ॥ दिवा कृता सुलसयमूखा दित्वा क्रिया ययनया नग ॥ सयुक्त
 क्रियदका र्हि ॥ मयनारि मूर्खयदा ॥ हयात स्या रुमा सिद्धि ॥ ययवायू मूर्खहया ॥ यागगन नथ सिध्या ॥ मध्यामायनिकि र्हिना ॥ उदमुखनः

गिर्यं ॥ विद्यासिद्धिमुलाकिनि ॥ दत्तकाष्टसूत्रक्रिय ॥ कथं विद्याद (अमूर्तं) ॥ गथायादनासिद्धिः साहवासमर्थसंसयः निव्यान्मस्यस्यका
 न ॥ मासनागुयवत् ॥ सार्वकर्मिकसुख ॥ दद्यासमादकगु ॥ न के कस्यगुयिनाया ॥ दद्याच्चूकगुय ॥ गजवयी लायुसायनकावहि
 ३ नावत् ॥ गनः पूजीयूनकला ॥ ध्यमृष्टिययानिना ॥ अथयय ॥ मनिमामृष्टि ॥ मासायदवगानी ॥ पूर्वमामकययस्यसगुमभुलकवत् ॥ ७१
 गनागुक्रमयागनः दवगानानिमकुनी ॥ रगवत्तमूरवनामः विद्यागजुनमामुन ॥ सहलिविगुमिदामि ॥ मभुलकवत्तमामर्क ॥ सिथानामनूक
 म्यायः यथा कं पूजनाय ॥ न स रक्तस्थरगवत्तय ॥ निधकगुमहसि ॥ समन्वाहवंकुमामृष्टा ॥ लोकनाथकयालवशा ॥ अहकवाधिसला

धः यावाचामकदवनाः ॥ लोकं दवनालकया ना ॥ यचरुगामहदिका ॥ असनाहिनता ॥ सलायकचिद्विद्यवत्तय ॥ अहममृकानमा
 न ॥ अमृकमभुलं ॥ स्वागुनकविथामः यथासुखायवानगी ॥ अमृयायदाय ॥ असिथगुमभुलसहिता ॥ सर्वसानिधकगुमहर्था ॥ न
 वमृकगुयावा ॥ नममृकलाचरुगवत्त ॥ साणायहानकलावा ॥ गनधिर्ग ॥ न सिद्धयारियुथानिध्यायचविधनगशा ॥ ड्रसचदत्तकाष्ट ॥ म
 सहवायिनिध ॥ नागि ॥ नागि ॥ द्वादसाभुलंसममि ॥ कालिर्ग ॥ धलायसुगकनविवशी ॥ गधदीयकजयदनि ॥ यानिनीः
 हृदयकवहसः ॥ सकसावाकलु ॥ सिथानामाविमानिनः दत्तकाष्टादिसंग ॥ काद्यानिर्धकायानि ॥ अथेवरादय ॥ गनावकादधकलन

॥ निष्ठात्मनी च धा॥ हामकर्मसदृता हि विः वसिंश्च दृगमि सिर्गे ॥ दृगनाद्रु निहामेऽधः दधन्नन्वहामयन् ॥ यथर्मविद्युर्सीत्यर्थः ॥ नाना नृदयनव
नाना नृभा निहामकुर्यात् ॥ ननः सिथान्यत्राकुर्यात् ॥ विधिना वाधिवासयन् ॥ हनदंः सजिनः दूर्यः समन्वयहनकथा ॥ नवीनवविधानकु ॥
३ जु विना नृक ससी ॥ यास्यवनात्रिवर्हना ॥ मासं हदधिवासना ॥ आदोषसंनयदया ॥ द्वाविधिविरुद्धनाग्नः ३ त्यादयननृत्यर्त्तः ३ त्यवस्मा जंरं
त्रयन् ॥ यूनः ननभा काधरिजधन ॥ वाविनात्तु ॥ याक्रिबः ॥ सिन्नसात्रजयसमाहित ॥ विद्या नजस्यद्वदयः गधद्रधनयानिना ॥ अलः
हंजस्यवरुन ॥ सयवा नमिन्नकनः ॥ चक्रवाहजिनकृतविः दूर्यादिसर्जन ॥ विवागयनियुक्ता सिथ्या ॥ भंधर्मदनादृता ॥ याहिन्नसाधिसान्

हाविना ॥ च द्वयागुत्राः नास्त्यः यात्रयीचयानि नानना ॥ याद्या नानादरुग्रय काममिथ्यानः कायासिद्धिमिदना ॥ नमद्यमससादि ॥ रकुर्न
वकदावनः ॥ सस्य वरुनसुत्रा ॥ यातायागनावा ॥ मृदगस्यप्रदसर्न ॥ दननिविजिक्ता ॥ ३ ॥ वायदिवा ॥ वृद्धनजधवा नानानस
मयन्सफद्रुलानि ॥ ननधसमययूय ॥ समन्वजिनराधिन ॥ सद्यद्वयागुत्रा नास्त्यः यात्रयीचयानि नानना ॥ नलयाद्या नानादरुग्रय काममिथ्यानः
ममिथ्यानः कायासिद्धिमिदना ॥ नमद्ययमास्त्यदि ॥ संकुलेव कदावन ॥ सत्त्वनामहिन्ननाका ॥ यस्यायं तलयायना ॥ वाधिविरुद्धमृडा ॥ गु
कदवाकथेवच ॥ अलपूरा नास्त्यतः यात्रयत्तलं ययन् ॥ नल्ययचनिर्मत्या ॥ नद्यायानाक्रममृडा कात्राकथेवच ॥ ननिदयमकुदवना ॥

मृदु कमानि न कृति ॥ का कन निद्रय सखा ॥ यमा विमर्का कवि वि किं तान कार्या ॥ अलम कवदा दिव्यं तथैव च ॥ इह गृह्यार्थं यनि ह्यय ॥ यथा वत्सवः
 विदो हि वद ॥ कृष्णादि हिः समगो दर्शना ॥ दक्षा हि वकायं थैर्द ॥ न गो वज्र यश्च दक्ष दानया ॥ न न च कादिस य न लादि निगृहीत्वा ॥ न च स्वना
 द्र वक वारुत्वं यो न दय याय स्याद नाय चा हि वि कयन् ॥ मनु धधयि कु कामास्यः ॥ निश स्या यां अवयन् ॥ न नः धद्वया मिलसीय नम्य ॥ यवि यमान
 यं यं गृह्ण दया ॥ न ल नि धन गी दी ही न न्यः स तर्ह चा दान गृह्ण सना ॥ दान क दानिकाः ॥ यत्र य मि या दया ॥ यम न ग न निवः यथा यि स्या नानि स विरु ॥
 य न द न द क्रि नानि निव दयन् ॥ अयु सिद्धि य गु न व साः ॥ कामान वा यि निव दयन् ॥ इहैव ज ल नि पू व स्य वः ॥ स्या निय न ला क वा ल मः स ख व ॥

७३

हृत्वं च यान किं यून द व सर्व ॥ सर्व वृध सम गृह्ण ॥ वजा चर्य नि क या यि ॥ निख द्रु व या क नि वि ॥ अ चर्य न नि द्रय न ॥ वज्र ला ह र गि मा लु ॥ यमि
 न नि दय न ॥ उय मा ह र क न कृ यो क ॥ न ल न या य का नि ल न क र म न ॥ गु न नि द का द्रु सी ॥ सम या कि का मि ना यि न थै व च ॥ न व सा य य का न न्य ॥ न व म
 मि स र्व वि द्यै हा वि ॥ नी सिद्धि मा प्रा मि ॥ सर्व स त्ता न कं मिः सिद्धि या प्रा मि सिद्धि र्जः ॥ अथ र व नू र ग वा न्द व द ॥ सर्व सा क दि न स र्वा र्थ यः म म सा ध न वि
 धि म ला व न ग य द र्द र ग व क ॥ सर्व वि द न थै व सि धि न ॥ द कि म स र्व द्रु न यि नि ल ध न न अ य ग थ ग र्ग ॥ वाम न्ना क मू नि ॥ सर्व द र्ग मि य नि स धः
 न ॥ न ज स ध सा ॥ दार्य व सा कि न ध व ॥ च द्रा क व र्ण य य य नि ॥ न्ना क मू न व ध सा ह ज या नि ॥ न था म ध र थ र य न ज ॥ नि न व र्म म क न ह र न ॥ ह न

निगकिरुनम् ॥ तयकामयननवनदकायन ॥ दयगावनेतासुविजयेवः द्रष्टुदमनगत्योः सदगाहिमखातिरवन् ॥ गयामधवाचनामाः
मकिः वागुलावासिनिगलाः सचिद्रकलातिरवन् ॥ गयामधकायस्कननिः मकनमसाधकलुभा ॥ गनगुकासिहिना ॥ मनकाजलयययनि
दू यूरुसिखन् ॥ धूयदियगधमास्या ॥ नेवद्ययूरुतानिः नानायका नानिवतिरवन् ॥ अधकासाधकः मङ्गलकला ॥ यनकतिरवतिरवन् ॥ गनश्य ५६
कसल्याधिसानः मवतम् ॥ तद्रुमिः नमलायुजयन् ॥ गनायदिमिरुयन् ॥ सिध्निधायी ॥ यदिनयन्ध्विनिमिद्विनि ॥ हसिगुह्यमसः न्ययन्
॥ धनरुजिगभवतः ॥ हिक्वाधनकन्या ॥ हतानिचद द्यधायी सिध्नि ॥ उरुममधमाधर्मसिध्दियूः ॥ नतश्यठमकुमुडा ॥ हिनधिरवन् ॥

यथायाफनचयुजयनस्या ॥ गनानिसद्यातिताक विजयनाम ॥ नकादिककला ॥ आत्मनत्व ॥ कथा ॥ तक्रुयवन् ॥ नका निवाजयन् ॥ यावः
कसिद्विनिमिरुसुग ॥ गनाविनकाविहानना ॥ अधसुनानियूनयन् ॥ मकुचनूनाधिककजयन् ॥ नकाजयावसामुत ॥ यववचिनयित्वावि
यूवा कयुजाकलाः नलिभकजयन् ॥ गनश्यधननयुन ॥ दवागयादियसनि ॥ गदालुजनमिधिन ॥ कामसिध्दिविहयय ॥ दवता ॥ गुरुसि
हि ॥ हलंगस्यददाविच ॥ नमसुखचसिद्वितमूरुमात्रादिहि नान् ॥ गुनूतलयसुतार्यद्रुला ॥ गनानिसिध्दिरुदा ॥ तवयुयाहागुहिता ॥ स
यसमावचन् ॥ सचसुखहिगका ॥ चककल्यनिरुन् ॥ प्रसिध्दिसुखताक नाहवन् ॥ जक्रुगगदादया ॥ ववसुग नरुनवाहिनाः दिसवाकमाकना

हवति॥ अथ खलु दक्षिणं रागवत्तदवाचन्॥ रागवत्तयाय कालिन्ध्या॥ नाना नकादित्सि रगानां॥ नकादिदूःखयहानीय॥ कथं यनियर्ह्यो॥ रागवना
 द॥ देवद्वन्द्वनूना नका॥ सर्वसत्त्वानीमहायाय कालिन्ध्या॥ कर्षीयथ नाना नकादूःखहानायाः सत्त्वमुक्तिरवति॥ गथाञ्जु॥ गत्येवमनुत्तं सिधित्वाः प्रश्न
 ३ हनसु गजकेः कलुषेऽप्युर्वववतिषर्कं कलपयन्॥ गतासु वियायागता॥ सर्वे नकादिदूःखयः शार्थं विमूर्यका॥ न च विमूर्यकाय मदात्माना॥ सु
 द्वायासदवयययनासु गजं वृद्धं धर्मसंघर्षं गिति॥ यायूवक इवेव ह्येकस्मिन्निष्ठिनाः च कुमनवाहिसाक्रान् कृतानि॥ गगुयनिष्ठिमाना॥ त्रु
 कूंकमनसि स्थित्वा॥ अयायमहात्मान्॥ सुत्त्वानाभाक्थया॥ यमकिं यन हि न नतः॥ कृत्यायति विचिन्त्यन्॥ ततः सुथा गिमनु मुद्राति॥ नतिः

१ दय

विरुद्धवता नूय॥ कलपयित्वा॥ तैश्च मध्यस्थाय यन्॥ सुयनदवता हृदया॥ मनुयैयदाय सिधित्वा॥ दवता नुत्तं विरुमुत्थायः गृहवासाय यन्
 सुयनदवता हृदया॥ सुदाय सिधित्वा॥ दवता नुत्तं विरुमुत्थायः गृहवासाय यन्॥ गतामच विदल्य मनु॥ कूहामना सिधित्वा॥ तैश्च कर्म कुर्यान्
 ॥ यावत्तु यनियुक्तः महायायिनः यायकुर्यात्काटिमयि यत्तयन्॥ नर्कं ह्येव य॥ ननका नूक्य रवति॥ गथा नित्यं च मूका॥ दवनि काय
 यूत्य यद॥ गतामच विदल्य यथा॥ मनुसहस्रं जयन्॥ कदाचिद्वनसहस्रमयि यूनयन्॥ यावत्तु निमयि यूनयन्॥ दवनि कार्याय यययक॥
 गतामच दल्य कूना॥ लुक्कसर्गं वायावद्वन॥ सहस्रं हर्म कुर्यान्॥ महाननक वायं का रवती॥ यावनि मिरुज सिनामि॥ सानसमूत्य यं॥ नित

मनसः प्रयत्नः संप्रयत्नः ॥ समिधं गन्धं कृत्वा ॥ यथाविधि हविर्गन्धं ॥ नमः सुनियतं ॥ देवनि काया ब्रूयन्तः ॥ निमिरुमयद्वयं
नि ॥ कदाचिद्देवनि कायाः दवारुमाउत्तना ॥ अथवा कृत्वा मध्यस्थं ॥ यदक्रि न कालाद्व कृतनामवकी र्त्तुं सदसु कृतना ॥ मिथुदिव ॥ नाम
दृष्टिना ॥ मन्त्राया मिमिरु नियन्त्रि ॥ अथवा वेद्यानन देवा ॥ आत्मानं कथे वदस्यति ॥ वद्वर्तमिभर्तुं कृत्वा मुखः यन्मृत्तिममनत्रिमिः ॥ ७३
नदर्शनं ॥ नवीन नदी दिवि मुक्ति ॥ यायस्साठन स एभयनया ॥ हगया ॥ चण्डरुयमानं कः यथाविधि कृत्वा ॥ ययन वज्रया नलि
रिव सध्या ॥ चक्रयथावग्य कृत्वा नमः ॥ स्वाद कृत्वा रवन् ॥ ऊथवन् ॥ सुखाना लाकादिव कृत्वा रवन् ॥ नमः पूरु कृतसा वात्त पूरु कृतना

॥ वासो दत्त वासाया न ॥ कृत्वा जनने वयानिव ॥ यथ्य माता दयनं थे वः विमानः ध्वजयतादि लि ॥ पूरु मद्यं ॥ सध्या विनयानिया ॥ नर्वमृ
मक्षमं कृत्वा समदना गयी ॥ लिखिते वं विधिः ॥ दवगनमा कथयन् ॥ मन्त्रं मन्त्रमूढाया ॥ अथाठा कनियः स कृत्वा ॥ पूजां कृत्वा ॥ देवनाग गन्धः
व्योः स्तिनः कृत्वा नवदन कृत्वा ॥ वस्तुतं कात रविमि ॥ इति मास्त्रं ध्वजगन्ध दीयन् ॥ यथ्य माता लिखितं पूजयन् ॥ चदाया वा होतव्यं थे वमन्त्र लिख
वधयन् ॥ कृत्वा मूर्खय दसः ॥ विद्याधि स्थानं कृत्वा ॥ तत्ताना कृत्वा द्वयः सनयाः वा द्वयः नाश ॥ कलि मन्त्रा दान्नामिकायः ॥ याति वक्रुदय
गुच्छादिः ॥ यय दध्यायः मन्त्रा कृत्वा ॥ नका कृत्वा निविशयन् ॥ नना दूगानिय निष्पन्नाया ॥ सनसन सहिर्गं स ध्याययन् ॥ नमः मन्त्राय

रिमक्तिनः वसुनशदयन् ॥ गनो हृदि जसु म्यक् ॥ यकातसहस्रः क्वातीकायः कुड्डसु निरि ॥ साकः मनकमाकृष्टायावगुयनिकल्ययन् ॥ गथे
 वचवृद्धि वानूगन ॥ यमिमाकं स्थाययन् ॥ यथाकं चतुगुनामिदं ॥ गथगनादिगुनकथे वाः कृष्टाद्यादिक म्यनिकल्ययन् ॥ गथे वज्रकाकयूजा
 इ करुया ॥ गनः ॥ अहनिर्दयं पूनयित्वाः कस्तनाययनिकल्ययित्वाः जिनादिनामस्तु न स न म्यनिकल्ययन् ॥ गनसाधनमकुनजास्ये ॥ कविस जं
 निवासा ॥ अहतिनिकल्ययन् ॥ गनः ॥ स्वरुयस्वरुमूरुः मयकने वानूयः ॥ अद्यादिना कयूजयन् ॥ वज्रयानियमया न धनने साक विजया नू
 यः ॥ म्यादः यमाकागायासः सर्वात्तं कातादितं कनः संवृद्धि निनिना कंनयन् ॥ अथवालि विरुसी हृदयन स न स हस ॥ यावन्काटि वा इह याग ॥

निर्मलसमयत्र ॥ यायसर्ग निवसुन गथे वरुनयी ॥ गनारुस र्गर्गसी हवनमकुनयथाविधिर्दहन ॥ गनारुसि वज्रासि वः गच्छादकं
 यक्क गयसदिगानि ॥ ६ ॥ धनमकुनकृत्वा ॥ यीश्वी कृष्टाकयू नगं हसमृद्ध ॥ मिश्रकृष्टयतिमीः ॥ अद्यदवर्ग वा कुर्यान् ॥ ७ ॥ अहिनवगुः यीववा
 नाम्ना ॥ अक्षरुनमर्ग वा नीवा ॥ मकुमूजारि वधिषायः ॥ लकृयजयन् ॥ गनार्थं कस्तनि ॥ यमिमा वा हयानि ॥ गंधधूयन थाजि ययमियलानि
 दवादिः ॥ नानायका नानयस्य ॥ अहियति हयानि ॥ यमनि यूयादिर्नः ॥ नंखरुनि ॥ वंसवीना कनदा ॥ अरुन ॥ कदाचि द्ववगानिमितानि ॥ याः
 यवहवनयायनि ॥ नयन्धरुदाक्षे वक्रस हसामिजयन ॥ यावात्र मिलिगवनिन थगर्ग पूजयित्वा ॥ सुसमाहिनी जयन् ॥ गनारुनादिर्दति

धिह्यज्यन्त॥ नदावर्ष्यायावन्तु द्वासायस्यन्त॥ देवनात्रयकार्यन्तः संमानयन्निजानामि॥ नानिनिमिरुनिः स्रुताप्रविकसविला॥ मेगीक्या
 यन्निगशासर्वकमानिक्रयान्॥ नवमयियदिनसंलवन्ति॥ नदाननाममार्गलिखितः वेद्यमात्रक्यान्॥ यन्निमीवाहता॥ दामाहिवर्कद्वयः सः
 ६ निनियनिस्रुतामयद्यन्त॥ रुससर्वयवात्रुदादिभ्यः नामनिविदद्यन्तिः मन्त्रासमुद्रगमिन्ना॥ नद्याक्रियन्तः ययियसाधिः दुर्गाकविमात्रक
 : यर्हमीकृतसर्विज्जमत्यादिः नवन्तवृद्धत्वस्तसमध्वगन्त्या॥ दाननितक्रांतिविर्जध्वनयद्वाः द्रुयवाविगस्या॥ यन्ध्वानासाकस्याः दुर्गाक॥
 दः यूनर्वादानात्रसंयथायन्ध्वानादिनकृततायन्ध्वः नास्तिवद्विष्टाधिमात्राः यासनिष्टत्वास्तस्यन्ध्वानाः नविध्वानायकावनाः यायानरिष्टः

स्यात्माहयिरुविषयविलस्यः वाधिविरुविश्रुता॥ विग्ननागद्याठकस्यः देवनात्रुद्धधर्मसंयथा॥ मन्त्रमुद्रागनादिनाकः नास्तितादस्यदीनाः
 कः यायीयसाभर्षीयद्वायाया॥ हवम्किनास्तिनिस्रुगन्तिनेहाविर्ग॥ अथनकादथाडरुद्रयन्त्रावनाः साधितिकार्यनिस्रु॥ सर्ववयित्वायुज
 यीतीत्या॥ नक्रनचयनदिनत्रलः यथाविह्यार्कद्विषयीन्वीकः वर्जसहीननववदा॥ यामनेकविभूतध्वनी॥ द्वीतियनखजध्वनिः सर्वयद्वा
 यविनि॥ नित्कृत्तत्त्वाभनना॥ ॥ उंयन्त्रयनिनीतकृत्तुमायियस्यादा॥ अथस्यमुद्राहवन्ति॥ दक्रिनहसुनवाहमृष्टिंरुत्वा॥ क
 नीयसुमकमनाडु॥ नाकभसिषाजुत्या॥ वज्रतक्रनाः द्वाताः नामिकानर्जनिक्का॥ वजाकावना॥ किश्चिन्नयमेदियन्त्रयनिमूडा॥ विष्णुगन्त्र

नृदाः कुरुवर्तुवर्तुजाः दक्षिणरुजासीगजवर्तुधनः वामासीर्गववर्तुधनः वज्रहमाकनकवर्तु॥ पूजनरुजायुधिहवर्तु॥ वज्रयः
 भूमयुना नृदाः वक्रावर्तुवर्तुमूखा॥ दक्षिणरुजासीर्गववर्तुधनः वामासीर्गववर्तुधनः॥ कोमात्रिवज्रयः कवदवहाया॥ सोनव
 ३ जोहसा नृदाः कनकवर्तुवर्तुमूखा॥ दक्षिणरुजासीर्गववर्तुधनः वामासीर्गववर्तुधनः॥ वज्रमात्रिवज्रयः कवदवहाया॥ वज्रयः
 स्वगजाननो॥ रोमवर्तुवर्तुवामरुजाननवज्रधनः दक्षिणरुजासीर्गववर्तुधनः वज्रमूर्खीवज्रयः कवदवहाया॥ वज्रयः
 दक्षिणकनकमयजनवज्रधनः वामनासयद्रादियमगुत्तमानकवर्तु॥ वज्रमूर्खीवज्रयः कवदवहाया॥ वज्रयः

जं

दक्षिणकनकवामनः यमवर्तुधनः वज्रकुरुवर्तुधनः कवदवहाया॥ वज्रयः कवदवहाया॥ वज्रयः कवदवहाया॥ दक्षिणकनकवज्रधनीः वामनद
 धनः कुरुगीवः वज्रयः कवदवहाया॥ वज्रयः कवदवहाया॥ वज्रयः कवदवहाया॥ दक्षिणकनकवज्रधनीः वामनमात्रसमादायः कुरुवर्तुधनः
 मखतावज्रयः कवदवहाया॥ वज्रयः कवदवहाया॥ वज्रयः कवदवहाया॥ दक्षिणकनकवज्रधनीः वामनमात्रसमादायः कुरुवर्तुधनः
 वज्रयः कवदवहाया॥ वज्रयः कवदवहाया॥ वज्रयः कवदवहाया॥ दक्षिणकनकवज्रधनीः वामनमात्रसमादायः कुरुवर्तुधनः
 कुरुमात्रधनः॥ वज्रयः कवदवहाया॥ वज्रयः कवदवहाया॥ वज्रयः कवदवहाया॥ दक्षिणकनकवज्रधनीः वामनमात्रसमादायः कुरुवर्तुधनः

नक वज्रधराः वामनक वज्रधराः वज्रवत्सा वज्रवती वदयन्तुः न स्याद्विहाय यश्न वक्रवर्ण निविजया वजाग नयति मनुका नूतः
क्षिप्तवर्ण दक्षिणः कनक वज्रधराः वामनवत्प्रधनः वज्रवसाना विजयवज्रवत् वज्रमुख वक्रगयस्यः विमानमा नूतारो भव वक्षः दक्षिणक
दू वज्रधराः वामनमुख वधनः विजसु निमुख वदयसु लीन्या विहाय यश्न वामनवत्प्रधन नीतिः वज्रसीत दनानी च वक्षः मृगभूः ३०
दा दक्षिणक वन वज्रधराः वामन यज्ञधराः वगवजि निवज्जानित द्रवत् वज्रान वदनाः इजा नूत प्रक वक्षः उद्ध कस्य राशि निखका ना
दक्षिणरुजायीः वज्रसुव वधरा वामा ली दनु कम नूधनः वज्रकाला वज्रान वदनाः वज्रलेन वदना निता वना सा नूतः दक्षिणक तन वज्रध

विः वामनगजधराः वज्रविदम द्रविज रं नवः वदयन्तु विहाय रस्थाय द्रव वामनवासः वावनिनिः वजीरु भवनाः क्षयनाग नूतः
निव वनाह मुखः दक्षिण वज्रधराः वामनो कसुधनः वज्रमुख वानिय नूत वाहनाः निवावलाह मुखः दक्षिण वज्रधराः वामन वर वध
नाः वज्रकान वन काम दिवा नूतानी साः दक्षिणक तन वज्रधनः वामन यम दनु धलाः वज्रका ना वनिः वना न वाहनाः वामनवत्प्रधन नि
दक्षिण वज्रधराः वक्षः वक्षः विना क वन कः उद्ध नूत सिन वक्षः गज मुखः दक्षिणक ना ली वज्रय वधनः वामा ली निभूतः
दनु धनः सय यक्षाय विनिः वज्रयूग न वनि नात वक्षः दक्षिण वज्रधराः वामन सत्मा जनि का धराः उद्ध नूतः ना वज्र वन काः मक नाः

नृदासकहनामिनवर्ष। दक्षिणनवर्षधनाः वामननागयाहवधाः वज्रकमत्राप्रसिगवर्षः सकहनादक्षिणवर्षधनाः वामनवर्षः
 किमैकेसधनाः सिगाधमावर्षदक्षिणनवर्षधनाः वामनवर्षधनाः प्रदगधनिनिः। एतेनवर्षदक्षिणनवर्षधनाः वामनवर्षधनाः सनः
 इ स्वनिविनाहकाः वामनदक्षिणनः वज्रधनाः दक्षिणधमावर्षसिंहानृदाः दक्षिणधमावर्षवज्रधनाः वामाखीः महिषसंखधनाः वाः ७९
 सर्वासामग्नौ नृदादीनीव॥ वन्यययनीयदिक्षिनकप्रवृत्तमृककणिधुविकहायमिति॥ सर्वलादिकलाकारु नान्यदवनावेलाचः
 नसंमखात्तस्यङ्गिः नगः संधाकात्तस्ययाक॥ वज्रगणिं यानीतयुष्मात्तामादाया॥ मधुतयविहवृद्धं कात्रमूडाहवर्ग॥ वज्रवेत्तावनसः

कथदक्षिणक॥ नंरवज्रधनावादनकु॥ यासर्वमहर्षं चानितिक॥ दावधकयनित्रिक्तमालीरुगवर्ष॥ निर्यागवज्रनृयकला॥ अदायः
 स्वसितसिद्ध॥ यगुर्हं कात्रनवा॥ गथनत्थकं यद्रुं यत्रया॥ द्विजकदाधकमूना॥ अवाधयवज्रधना॥ सिधननवगुयङ्गि॥ नगामधसि
 नोहत्वा॥ वजाचार्यः समादिना॥ मनसादद्यायसेव॥ वज्रदानवगुह्यं॥ उं वज्रयादसमयहंङ्गि॥ मूजावासहवनि॥ द्विवर्जोदतिसम्यः
 क्वं वाञ्छा॥ रुनगादृष्टविदानयम्॥ मं कदादावाद्यादनमूरुमामिति॥ नगोऽरुभादिरिकमानिहत्वाः सकचलामयंकलर्ग॥ मलयवाकात्तम्
 सा॥ मूर्ध्नीवत्तन्माहमहादवः दिवगत्थादकंसर्वत्रलम्॥ सनिर्वावीसधानयनियूरुः सर्वोत्तंसयत्तवसः धवावद्वसकहत्वा॥ चक्रं वदिः सम

मादियर्गधनतिरुक्कविनवजादिनः मोति॥ महावजाधिविक्काधरि॥ नित्यविगृहिनया॥ वज्रसूनगया॥ उं वजादकहं॥ ॐ न
शरुनसहसादि॥ मन्निगच्छुहं का ननवायू॥ सगानिमज्जिनकृत्वाः एगवगावजहं कातसायनः संसाययवधयन्॥ दानाहिमुख॥ वदि
दू मिदिगियकसर्गः चणुकातनायूसनजयं साययः रुनादकनामाः निष्कारिषकं कृतायवधा॥ मुडा मधवधयदा॥ यवादजमन्नयके॥ ॐ ५२
खमुकामनिरुथः सर्वलानिसिहं व्याय॥ गिप्रिकृहसहासददवाचनि॥ सर्वायधिया॥ किलात्मावान्ः जर्वाधयानताध्रमागुतियकेमान्॥
सवदनसर्वीदिनीः यचगानवस्यनकृयन्॥ गदनुचणुः यनामादिः पूर्वसम्वजगहदित्वा॥ वज्रयवननिलावमानियनिजयः सत्वादि

यवमुद्रातयाताः मूखावर्धनः वज्रकवचनारुचियाः मावहाष्टिवाविकुमाचार्याः काधननगियानि॥ नित्ययथमातामादाया॥ उं वज्रसमयस्यवि
था॥ सर्वगथगनमिहायया॥ प्रहंरगवक्रमियादिनाः नगावजादकमिहत्वा॥ लावेनकृत्वा॥ गानात्मा॥ महामलुत्तयविह॥ सासिचसिवहामूव
वधमुखवधमुक्ता॥ यथावत्तुर्तद्वहा॥ गिरवज्रयादिनाः यवसुमुडामाकं नकृनादकाहिषक॥ यक्वृद्धमकृणः यणुवज्रमाताधियनिावज
मामाहिषकः एगवकनकासाः एगवकयनम्यगृहितान्॥ तुधर्मसमयसिद्धिवज्रवगद॥ दावययूयादिरि॥ लान्धाहिहान्मानसंयुक्ता॥
यक्कनामूहाकृगुहं का न॥ मद्रवायाकवर्नवदायः यूनसाधिसनकृयान्॥ यथाहिरुचिनजायच्छहं कार्गः वजाहं हं का नवजामिति॥ सनाः

ॐ नमः ॥ वज्रनाम्नादिनीवजावधायकामिति ॥ नदनकर्त्री ॥ अ० अ० कात्रादि विध्वजानिष्ठायाः कर्ममुद्रा वद्विद्यान् ॥ तर्कमाकाधमुख्या
द्वयः वामवज्रास्तुतिगार्कः दक्षिणसमुद्रा ॥ वाध्वीनाममुद्रायः वृधवाह्विद्यदायका ॥ सयवकवर्नद्वार्याः वज्रहं कानवजसत्तः वजा
नामाह्वयद्वयसुहृता ॥ वामायननयासावः साध्वकानद्वादित्तिना ॥ अतिथर्कद्विवज्रकुक्कः वज्रहं कानवजसत्तः ॥ काध्वकवज्जिनी ॥ द्वादस ॐ
यद्यद्वनना ॥ वामसुवाह्वद्वयः कथमस्ययनिवर्तना ॥ सूर्यायसूर्यावर्कनाधर्मः हं कानवजधर्मधर्मवज्जिनी ॥ द्वादमाख्यप्रध्वननि ॥ अना
गवजशमिताः वज्रद्वयमुख्याह्विताः वज्रनृस्यमामूककयागवृषसीह्विता ॥ कर्महं कानवजाः कर्मकर्मकवज्जिनी ॥ वज्रवाकनिष्ठादस

गाम्भिरद्वयनवीथीगीताः ॥ वज्रगह्वयथागनः नमदास्यकतिर्गोमातावध्वमुख्याह्विताः नृस्यगाम्भीसंयुता ॥ अक्रयाह्वयकयाः नमाहुः
ह्वितीगीता ॥ गध्वतयनयागवृषः पूजामुद्राः यद्वह्वितागार्कनाह्वनवध्वन ॥ कनिष्ठयामहाह्वनी ॥ वाह्वगद्विद्वयगाम्भीस्ययानिधि
तिगीता ॥ द्वादयातामुद्रा ॥ सर्वध्वकर्ममुद्रानृस्यह्विता ॥ ॥ कनायध्वतयानुसाननावेनाचननादिनामह्वमुद्रावध्वक्यान् ॥ वज्रसत्तन
वधर्मकर्मकाध्वनीः यामह्वमुद्राकाः सत्तनवधर्मकर्मवज्जिः नामध्वजान्नाः ॥ मीनूयध्वनिष्ठा ॥ नायियामुद्रानुवध्वियान् ॥ यस्य
स्यमहात्मानः सर्वमुद्रासमयः ॥ वामगध्वगममुखिमुकनं कलाः दक्षिणह्वगार्कनाह्वस्यतीः कनीयसिमानस्यः विवासर्ययवह्वितिक्याः ॥

दियमैलादिनीसमयमूडा॥विद्याचैवांयुवाङ्गना॥मवविद्यानवीजिह्वामूनसःदियनवीधर्ममूडा॥अकासनसाहदिविखवजनिव्यायःनवी
 नवनमहामूडाश्रद्धाःकर्ममूडावर्तनि॥सहदियकसुचिकर्जवित्तियःनवीगुसानननवानयाःमहामूडावधनियाः॥स्यविद्यायासमा
 ६ म्यति॥कनिष्ठादुष्टवधनुःवामश्चाहृतिगुत्तिःमध्वमूतंगुवजमूडायनिग्रहःवजविद्यारुमखयःमूजगुत्तहिकिलिगा॥अनन्य
 नयवश्यामि॥मायावजादिसंहिना॥वजवधदधिकृत्यःवामवजंगुवधयन॥वजमूहनिनिन्यानासर्ववसुजकृतिहिना॥द्विचिह्न
 खगुनद्वर्ज॥सर्वचिह्नविधनीनी॥सर्ववजकूलानीकु॥मूडासुचनिवधयन्॥यसानिनाययूखगहाधना॥उंकाजमूधिसंस्तानु॥वज

खवायतिहिना॥विद्यानजमहामूडा॥गर्भयन्निनायनापानिहसुनथैववा॥मूहिसंस्तानुजाह्वतःसुखिनयनिवहिना॥वजकाधमः
 हामूडागनाः॥वामामुष्टसंस्तानुःमातावधिकाजिना॥दक्किनाथदायितःखप्रमूडायमूहिका॥महागनयनिमूडागनःदक्किनगसु
 मूवमयन्निनयजानथा॥दक्किनकलनदध्वःवजमूहियककिता॥द्वहमहामूडागनः॥सुवर्ममूखाडवायादुयनययाजिना॥वाहसका
 वनयावःवजदक्किनाहानिनिनि॥वाममहामूडा॥अथमादिमाहगनमूडावर्तनि॥वामवजवधन॥गिगुत्तादकुयिगुयन॥अनयावः
 धयाजसिध्याविद्यारुमःसया॥सर्ववजकूलानीकु॥वामवजागसंगहः॥मूडावधनयवश्यामिःसमयानीयथाविधि॥वकसर्वगसयि

जायन्मूडागयेवनागयेवद्वानमूडाकु॥सिंहकहियात्रगदा॥मूडागजनिकाकाताःयत्रिगदमवव॥दनुमस्त्रिगदावेवःसूखगयत्रिवलिनाः
काधसमयायस्यहनामूडामातववजावस्यनामिका॥मुष्टिकावेवगनिका॥मनुर्तवद्वानहनिःकागविकासमयाःवाहववकावयस्य॥
यातिकिरिणाःकातासूतिंगमाकवःविदाविनमूरवस्यनाःदूमनिसमयाधनाःयद्यनमुखीयीअने॥वययागनावाहवस्यनःवस्यवसः
हसाहविनीःनत्यनिनीनत्यनिःचगासमयाः॥तिपागनामहादवागिजिह्वाःसूगनयस्यभूकातनाःसुहादनयेववजनिथादःनया
मूडावद्वानकर्ममूडारुठति॥सुहादियकसुविर्कवजसितायामहामूडाववाःनूसावनावधनियान्ति॥गनालगवभावेनावनैःसुद

काल्यर्कवज्जलानवावज्जलारिवकैनाहिविचः॥वावदहंकावादह्येकःवृधमकूटावज्जमाताःयगाकारिवकैनाहिविचः॥गनाइयदः
त्वाःयजाहत्वाःगगनावदत्रादिमयान्॥कतनायूवाकूतकनानुःवजादिराविकाकनानुःवेनावनदिमकावाकमभुससाकनानिवेन
ना॥यूवाकूवाधवमयूगनकःदससहभुगयलकमकमाःसर्वसमान्॥ननायकानानिविरावनानिचुकानःविचिर्गयटाकावाकानिःद
गवजयटाकावाः॥कातनवावज्जहंकावनवःयविजयश्च॥रवमिताननसर्वदेवनानिरागतयान्॥यूवाकूसगर्गचकुथावाःवकासर्व
यूथानिवःवजाननममूडायूकना॥वज्जयूथहं॥निचयूथमूडायाःविमकासर्वसत्वाःसर्वोसाधवितयनःसगभकान्गयेववजानतन॥

ॐ वज्रगह्वरं ॥ स्थनायामूढाय कृपाः वदनानि सन्निधानानि ॥ गत्येव वज्रजाननना ॥ ॐ वज्र धृतं ॥ स्थनया धृतमूढासहिगयाः धृतघनिका ल
 कंदनसहस्रं ॥ ससगयाथातारुत्वयाः यमिततकंदनसहस्रं ॥ गत्येव वज्रजाननना ॥ ॐ वज्र धृतं ॥ स्थनया धृतमूढासहिगयाः धृतघनिका ल
 ॐ वज्रालोकनं ॥ निनादीमूढाय कृपाः यमिततकंदनसहस्रं ॥ ॐ वज्र धृतं ॥ स्थनया धृतमूढासहिगयाः धृतघनिका ल
 दहनस्थवाः सनिकमदिनः ॥ नानायकानि चरुनि ॥ गत्येव वज्रजाननना ॥ ॐ वज्र धृतं ॥ स्थनया धृतमूढासहिगयाः धृतघनिका ल
 दितयान् ॥ दहनवाद्यसहस्रानि ॥ सहस्रं लनवाद्यानिवा ॥ ॐ वज्र धृतं ॥ स्थनया धृतमूढासहिगयाः धृतघनिका ल

ॐ ॥ विना वसा मूढा काचा रवि मृदङ्ग यट्ठं गुजा मिमिता रिनय ॥ वाहनरुमरुत कृत्तमकूटा हिमयूजा ॥ ॐ कालनानिमंठा
 मथवहना ॥ वलम्वनाकायाः कामवदियुधिनाः दानाधेदानवाचिनाः ॥ ॐ वज्र धृतं ॥ स्थनया धृतमूढासहिगयाः धृतघनिका ल
 प्रणानिवन्म्यानि ॥ यन्मादिनादिना निवः ॥ वज्र धृतं ॥ स्थनया धृतमूढासहिगयाः धृतघनिका ल
 दीवयन् ॥ निनयं कृत्वा वज्रलाभ्याः स्वविधायूजा हि ॥ काधमूढिद्वयमूक ॥ कर्ममूढा हि ॥ सर्वमूढा लयूजयन् ॥ वज्रमूढिद्वयवद्धा ॥ गत्येव
 द्वययज्ञानयन् ॥ काधमूढिद्वयवदिति ॥ यूनवज्र कृत्तममूढाः ॥ दहनकर्ममूढा हि ॥ यिसंयूज ॥ सर्वकाधकृत्तविह्वयनरु सर्वसत्वा

धकृतर्धसर्वसिद्धिनि॥ ॥ गंगावाहवलिंदद्याः द्रुह नसाधकमहसयतिहायः सनोर्जसगिर्तिसमूः सहर्कद्रुसर्मेः सहासयकालि
 कादिराकिः का नादिनीयनिजयः यवोदगलगमानस्यः णिः कृयाज सधूययुषादियाईनाः दावरुवदशार्गकुः युवनावसुलानिकार
 ३ यन्॥ गनः ४ सावाहयकनः समदलयदद्यैवगश्चादिहसंयुष्य वलिंदद्यारुणाविसर्जयदिनिः गनममूडामडांरवनि॥ ॥ आलिङ्गा ३८
 यदस्मिन्॥ १५ मूखावामवज्जदलयन्॥ दक्षिणर्कटिदहासधायः दक्षिणर्गर्जन्चां कृणवदिनाः ६ कस्य समयमूडा॥ यथातिदयदनहिताः ॥ आ
 वाहनमूडायाः गर्जनीयसार्थविसर्जनमूडा॥ अथवासामकु॥ नमावजस्यवदिहीवज्यानिनकरसाहा॥ ॥ दक्षिणकलगर्जनिः ३९

इलाकालनकृच्छयिताः मध्वमासुयास्सगीयः यवधनयर्गुसुककः कतमध्वमूयनावाहनमूडा॥ आवाहनमूडायाः अगुटसुगर्जनिः
 याहच्छाः निगमभः समयमूडाः ॥ अस्यावमूडायाः कनमध्वमूहिमूखावर्गुसुः गर्जनिनखाचगकाः याहाविसर्जनमूडासकु॥ अथयेका
 कवितकृतकृतहदखिविनासातविनूयाकसाहा॥ ॥ वागाहिमूखायागीः अहिमूखकनोदलाः असीकनवजवधमध्वमूसु
 यूगर्तवहिः नात्रामिकाहयाहक॥ सचियूननयन॥ धनयद्यस्यावाहनमूडा॥ अस्यामिकायूनवाहनः सचिगथैवहत्वाः मूडाहदय
 हात्रयन्॥ समयमूडा॥ अनयेवानामिकासुयाः विनर्जनहवनि॥ अस्यमकु॥ यमायसाहा॥ ॥ नैसायाहिमूखसमयदहिनाः दक्षिण

कनमूर्खित्वाः गर्जनीकृत्यनधनयन्॥ खेप्राकात्रनसहायः वामकटिहः धर्यदामगर्जनीकृत्ययित्वा॥ नैषयवावाहनमूडाः अस्यानवमूः
 डायाः वामकलंकटिदहावहिनः खेममूडानेषयसमयमूडाः आवाहनमूडायाः सुर्जनीमूडयंग्रस्य॥ सर्वरुगतर्यकनकृतकृतस्वाहा
 ॥ ॥ वानूष्मादिनिसमयदसिन्हाः दक्षिणकनगर्जनीगुह्यः वक्रगाथाजयदाममूर्खितादसधर्य॥ वामनयान्याकृन्ना॥ नावाहयवः
 नूनस्यवाहनमूडाः अस्यानववाममूर्खियाराः नांधानयत्यानमूडाः आवाहनमूडायाः सुर्जनीचुसाय॥ विसर्जनीमूडामक्रास्या॥ हृहयूः
 हृहृहृनिस्विनाशिविचूयाकृत्वाहा॥ ॥ वाययादिनिचूहिमूर्खित्वाः वामकनमधमार्गिचुविमूकः गर्जनीकृष्णकालनः हनिः

ययवसंदध्वां धिमूर्खित्वात्रयन्॥ दाकनकनकटिदहाः सहायकृतिनाशुहनः वावावाहनमूडाः अस्यानवगुह्यवः सधयवायास
 मयमूडाः आवाहनमूडायाः अंगुह्ययनायविसर्जनमूडामक्राः डंससखाखरखरवखाहा॥ ॥ कायमलिमूर्खित्वाः कनदयमहि
 मूर्खित्वाः लयकनवजवधकनिसाः द्वयस्वाकस्यः एहनः नासिकायुगतसंधायः मधमासचिवजाकालननाः कृववावाहनमूडायाः अस्या
 नवमूडायासध्वादयः मधकनवजवधयाः कनान्यस्यकृवनसमयमूडाः आवाहनमूडायामधमादययसार्यविहर्जनामक्राः डंकृवना
 यखाहा॥ ॥ नेष्मादिनिनदधिमूर्खावहिनः कलाहयाहजाजैर्लित्वाः कननामिकानलवजवधकृत्वाः अयुगतमधमाधिः

नः मध्यमासुवादि वज्रका ननः नर्जनिद्वयनननद वाकृः यत्रियनस्यननखा नकं कुर्याः दिना वाहनमूडा ॥ अस्यान वनज नोयवः
 प्रजाकातनधनयादीना वसमयमूडा ॥ अवाहनमूडायाः सुर्ज नोय सार्य विसर्जनमूडा ॥ मकु ॥ उं रं रं निवखाहा ॥ ५ यत्ना विदः
 ३ स्ता र म्पत्याः कतनहसुसधयो ददृक्षाः नर्जनिद्वया कृष्ण ॥ व कादिना वाहनमूडा ॥ अस्यान वनज निद्वयं पूर्ववत् सहायः समयमूडा अवाह नं १
 नमूडाः सुर्जनिद्वययसायः विसर्जनमूडासकु ॥ उर्द्धवज्र नयखाहा ॥ ॥ सूर्यगहधियये टेखाहा ॥ वज्रानरुणाधियठ यखाहा ॥ ४
 समयदर्शनमाहायः हसुद्वयमकदीयाः आविनता शकुत्यः अर्षया द्वं गुक्ष वकु नाका ननः ध्वा दक्षि कृत्वा रथियी विनी नजन्य न्य कृष्ण खी ॥

अवाहनमूर्तु नोः पूर्ववद्यवखायः समयमूडा ॥ अवाहनमूडायाः अयसा नितनर्जनिखी विनजमूडाः मकु ॥ उं अर्धयथिये खहा ॥ उं अस्नयः
 खहा ॥ उं नागयखाहा ॥ ननः अ वमर्नसमकुनवः सर्वथादत्ताः त्वा सजिथगनस्यः ममा चिधिसाकृन्नधर्मसिद्धि कः ययदः ॥ ॥ कृत्वा सत्ताः
 वित्तजयदिति ॥ अथवा सुवाहयनियधिनना थारि तदद्यात् ॥ ॥ दवास्नाः सर्वलज्जसिद्धा नः सयू कृत्वा दना ॥ गन्धर्वयक्षाः
 ग्रहजानयन् ॥ यका विह्वमो निवसक्ति दिवा ॥ निरुक्तजान् यथिवन नः सनद्वगा अविस्ति विहाय यामिनकु ॥ सयू दानः सहस्रतर्षीयः ॥
 त्वा ॥ हायकु ॥ अनुराहा ॥ यमनू रश्निवसक्ति हगाः यनद्वनयं सनायय ॥ यवा दया सुनठिमकुत्तः नगत्रयू सर्वयवसन्नि ॥ सनिमवा

सुखसंगममूत्रलाभयनायकृत्ताधिरासावायिनदागमूत्रयत्तु॥ कृयवूवयषूत्रनिर्णयसूत्रययामयूधारावयूत्रकानवाग्न्यावयवतः
गृहययचविहानेवेलावसवागमयूःमथनयूसात्रासहर्षज्जलानी॥ यत्तुहनाचिरुगृहवसंगिःत्रथासुविधिसूत्रचलनयूःयवेकठकृषू
३ महायथयःमहाभूममयूमहावनयू॥सिंहलज्जाधियगिष्ययचवसन्निधात्रासमहादिविषूदियायूकृतात्रात्रयावःमनीषमभान नं२
निवसन्निधयःदृष्टाभयमनाःसुगन्धमालीधूर्यवतिविधिश्चेत्तुङ्गागुत्तुङ्गदवकुचदं॥दृष्टवकर्मसहर्षसुसंक्तु॥दिगज्जन
लेकनायकायन्॥दृष्टागुत्तुङ्गसहदवसयेःविमचगृङ्गुवतिविधिसिद्धाश्रयमानेयत्तुहयनिष्ठा॥आयायनिवायूधनाधिययः॥

नरकाधियनिष्ठादवाःउर्ध्वचार्कयिनागमहायदवासमकारुवियचनागम॥धवाशुङ्गगलसमसायनियानित्कनिवदनकुसुकावदि
॥गृङ्गुगुत्तुङ्गसुवतास्येः॥सयूगसमृद्धजनेसमगाःधूर्यवतिद्विरीनिवदनकु॥जिद्यकुचदं॥दृष्टवकर्मसहर्षसुसंक्तुमात्र
गार्यसवाङ्कनतवतिपदानमका॥श्रुकात्रामूरवसर्वधर्माभमाद्यनूत्यत्रत्वादिति॥ ॥गृयूवीहात्राहिमूखावसिगःसर्वकमि
ककुलुमध्या॥द्योतिताकविजयमनुर्तःसर्वदवनामकानूदाहनःकसमेनिवसुद्धामविधिन्॥द्यावज्जहंकात्रनाशरुनःसगयायुतः
नाहनिदद्यान्॥द्यावेभावनादिमनुत्तियवमृगकाधययैःसकसकाङ्गनिःयूननगायथावदग्रकुलिःवेभावनादियुथनवाक्या॥वेभाव

नादिमकुनातिरवतः मनुतससुनवनिवसयन् ॥ न नः सर्वथागगानुयनम्यश्रुहंश्रुमूकनामाः वर्यावर्यामहागयाः निश्चयः ॥ यव
नः व्यामिसर्वसत्त्वादिनाथनः ॥ अणुचमनुतयव्या ॥ याजीयागुयनिकनकाया ॥ नरुस्यहकाः ॥ सनिरुगवकथागनाः कविसुत्तामहा
३ कानिरुदमजहंका नमनुतंदवा ॥ यविस्यवसर्वयायविगनारुविश्वनि ॥ सनिरुगवकः सत्ताः सत्ताः सर्ववहाजनकामगुनमहा नं ३
॥ समत्तामहाकालिनरुः दवजहंका नमनुतंदवा ॥ यविस्यवसर्वयायविगनारुविश्वनि ॥ सनिरुगवकः सर्वथाहाजनकाम
गुनमहा ॥ समयाधिसवतः हननदिरुसुनका ॥ रुयामयप्रयथाकामकननिया ॥ यविस्यनाः सर्वसायनियुनिरुविश्वनि ॥ सनिरुगव

कः सत्ता ॥ नृसगीनहासनासाः हायियनयाः सर्वथागगः महायानधर्मनाः नववाधवनदवकृतमनुतानियविसनि ॥ सर्वसायनियुवयि
ः सगहनयूननुरुननियनिरुदवः मनुवकतपूः सर्वथागगकृतमनुतः मिस्यारुयहिनानुयविसनि ॥ नवामयाचमनुतयवनयः यथावः
हिनः सत्तासासमयभवजहंका नमनुतयवसायजन ॥ सर्वनियीरुमसरुसोमनस्यहिवद्वनामनस्यहिवद्वनाथसर्वयायगनिय
वसाहिः मुखयथाक्रानिवरुनायवाः सन्नियूनरुवंधामिकाः सर्वथागगनितसमाधिः यस्सरुमसिद्धोयायेवद्ववाधिस्याथयकाः ध्यान
माहादिरियकः नहिस्यक ॥ नवामिकेवः वजहंका नमनुतयवः मकुनेवसर्वथागगत्वमया ॥ नद्रुतरुदिगयूननन्यसिद्धिविनिवहा

यन् ॥ गनः सिथानुयवयन् ॥ गनयत् ॥ सुक्रायदयानिगुहिनः ॥ अमनत्रकः सहि रूसमलंगुदी गनवा ॥ अचार्यारिषका हनाचार्यः ॥
 दयाः ॥ यनियुष्टेवः ॥ वक्रन्या ॥ त्वं भक्षामहाननः ॥ द्वा महमहानार्थः ॥ वाधिमलानयदृष्ट ॥ दहिमसमयः ॥ गतः ॥ सचलकददसमः ॥ नि ॥ गन
 ६ वजयक्रयानिजकः ॥ नीलवस्त्रनिवसनाकनी ॥ क्रयसुवर्जी कृष्णादिः ॥ दृष्टिप्राप्ततनुस्यः ॥ यानिजकमूरववयना ॥ निर्वीक्षनतनु ॥ यनामर्दनावनु ॥ नं ॥
 ॥ यनामकावयन् ॥ यूनः ॥ पूषकवनसिथनाचार्यः ॥ पूषकतनेवः ॥ दनानामादनाध्वनायावनावक्रत्वावक्रयै ॥ दहिमसमर्तविहाः ॥ समीचाह
 वगुमावृद्धाः ॥ अक्षयामुनितारुनाः ॥ अहं ॥ पूनूम्कानामा ॥ अचार्यसामनस्मिन् ॥ यविसानिमहागुच्छः ॥ वृद्धनारुदसंखवा ॥ अवेवाकृदकाद्यः ॥ म

दामाक्रमथर्ययूना ॥ यवहामहाचार्यः ॥ सर्वगुच्छकृत्वाचर्य ॥ ददस्वममहाहाग ॥ अवेवाकृदकाद्यकनी ॥ ददस्वममहाचार्यः ॥ तक्रनस्यनूमूदस्य
 ॥ पूनूयश्चनसंयुक्तः ॥ मृद्धकामामभाजमी ॥ ददस्वममहाचार्य ॥ अरिषकमहागुच्छ ॥ अचार्यारुतवनिर्वीसर्वश्रुतार्थकावनानु ॥ गनः ॥ अचा
 र्यन ॥ सर्वकृतविह्लादिः ॥ कार्या ॥ पूर्यमकामुकनासाः ॥ वाधिविरुयनिगुहं ॥ ॥ दृग्गुहवक्रसिन् ॥ यवसमयसम्वर्त ॥ गनः ॥ माचार्यवक्रयै ॥
 ॥ दृग्गुहसलमहामहन् ॥ महागुच्छकृतगुहं ॥ वदस्ययनिगुह ॥ वृद्धधर्मकसंयुक्तः ॥ गिनलागनसूज ॥ नगवृद्धकृतनम्यैः ॥ संसर्गवतदृष्ट ॥ वज
 यभयमूजतः ॥ गायामकमहामहानवाधिविरुवक्रः ॥ मृहायनः ॥ नि ॥ अचार्यसगुहिनयः ॥ सर्ववृद्धसमागुनू ॥ नगदृजकृतगुहः ॥ सम्वर्त

नल्यस्यप्रियनसुखिनाननच्छ्रुत्वाः लमादकिनासादायवाहिः सिनकलसादकगारिषिच्छाडंगुद्रवजसमयहं॥ वमिखननकाधरालि
 निःनिमेषासिथनवधननः कृत्वा दयकृधमासः माधमहुवज्जनकाधनचिन्निनिमृताः गनसेवाहुसायाः पूषमासाहयित्वाय
 ३ वसयदननदयनाडं वजसमयविनामिति॥ पूर्वद्वाचवजाहूजनलः मादृशवामदक्षिनमयासनयवसयत्यन्निमस्सटनः वाधि नं ३
 याइसुवनवजाहूजनः वसयत्यूनः पूर्वद्वाचनयवसेवददः सायसर्वगथागनवजकृत्यविक्षाः गददनुवजहूनमृत्यादयिथामियः
 ॥ नहाननसर्वगथागनः सिद्धिनायियायासुकिमयाः सिद्धिः नवलयाः इहसमुत्तस्यवकर्षः मानसमयावधिनि॥ गनः सायमृजाचार्यः

धनचिन्निविमृताः वहुदंमृतिवजंजिथामुधिरुयववदन्॥ अयंनसमयावजामुधिरुयववदन्॥ यदिदंनसमयावजामुधिरुयववदन्॥
 द्वाहदयनसुखियायिनिजयनसेवजनिथायः याययदिनि॥ गनदंनयथाहदया॥ वजसलसयनइद्वाहदयसमवहिः निहिद्यनलनया
 या॥ यदिदुयाः मकयः वजादकः ॥ नि॥ गनः निथाययादयः यलनिनदं वजयानिदाहं वयाः मदहान्नलनयाः नलयाहमनयो॥
 मागवियमायनिहाननः कातयिदयादलः नवकयननसा॥ दिनि॥ गदनुः कानवजनसिमासायूकः सुहदिनिनयन॥ गनमिथदल
 लमुधिरुयवदमनुसंयकसुचिः कातनज्जलनयनः विववजश्चिन्निनयन॥ वहियथाक्रमयथाक्रमनहं गं ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ निदयाठायाडन

मयन् ॥ ननादामं कुरु निमः सहाता वृत्तं सस्यः नालितयाय दक्ष मान क्रियन् ॥ ननः यूनवजामन नथे वव द्वाः वनयन् ॥ नियनमावि
सनि ॥ नमयियायावसावनि ॥ नस्या विवकत्रवनि ॥ अविस्सयय क्तिहृदिनि सानिः सुन रुना दवरवनि ॥ ननः समविस्स गताय
नः ॥ उं वजसुखसंगदादि स्यादिगनमविरा ॥ काधमस्तिनेये वसुखवजिमूर्डा स्थापयन् ॥ सखदावि सवजसुखः काधमूडा मध्विया रुदाः रा ॥ नंद
यन वजसुस्काधमूडा वद्विया दवयाव सववजसु समूडा मध्विया रुदा वजसु कमकाधमूडा मध्विनियः ॥ नवसनि निश्च कल्याः नवसु
क्रिया मध्विनिय वृ हिः वजसु गित कृया ॥ ननः सववर्थयनि ॥ ननः सामातामहाहमवृत्तं ययन् ॥ यनि वजसु निनिनि ननायगविषा
ह

सास्य सिध्दान ॥ ननः सामाता सुखे वजित धयन् ॥ उं यनि गुरुमिमं सवमहावतः निः ॥ ननामूरववध्व कर्म वदनन ॥ उं वजसुख सयनया ॥ स
कृया ननन नयन उयागयन सव क्ति वजसु वन नरुनी ॥ दवरवजसु यनि ॥ ननामलु र्वजसु कृदादखः यावद्वे नानययनः दहाय रुतनिः
सवजसु दिनाः निथी ददयय वजसु माह दह ॥ नना वाहमलु लाय नवजसु मनुती ॥ यवेदा लाहि मूर्वी लेखनाः निथं धा वजसु कानमूडाः
याः सववदादि हिम्या धि सयमहामूडा यान नयनि स्या हि विस्स वग धययादि हिम्या वाः अयदलाः वजसु यनाकादिदः रुतर्गवः
निनादिगेयः ननामह तगाथा विनि नया नीवदुदका हि वकनः ननामूडा विवकनः मकूट वरुवसु धियनिः नामा हि वक धा हि वि कः यून

यथादिहिलाः यः स्वविधियुजं यावयुजयन् ॥ निश्चयवायवतिनः वजाः शनिनायनम्यः उरुवामादिक्लिप्तत्वाः युष्मादिदमर्शिरवकाः
३० ॥ अत्रायाः शिवककुः धावज्जका नमुदयाः गत्यवयानि स्यायथा निदिष्टवसमयमूडाहिनस्यः कायधार्हका नादिनस्यः यूनः नय
ननाक्षरुनः सगसहस्रयानिजकः विजयकलर्जकत्वा ॥ उं वजाः धयानि श्मालिषिक्लिमिः दृष्टमरुवज्जहं वंहाः रुदिनि ॥ गनः नि चादिनय नैतं
॥ उं वजाः हिषिक्लिमि नादका हिषकावाः स्रजवज्जमुदिनादकः विजयकलसगृहि त्वाः दयादिदकव्यादिः दनेनासिकमालिः समयातिक
मांदहन् ॥ समयाहिनकमसिद्धि यिवमजामकादकः वजयध्ववमूडावाययमभुतिना वयन्ः दनद्वारुदधननः जनसीमनिशसिग

॥ ३० ॥ सर्वविधिमनुष्ययः नामावृत्तनसुलसगथः यक्कनानुहदत्वाः हाटवाकननः मननिशान्वाक्यादिनि ॥ अथगुक्लिर्काह
वनि ॥ अत्रायाः हिषकासुवहाः सर्वमभुलुगनकचूसु ॥ अननकर्मसीसिद्धिवयिः यथाश्रिनायाप्रातिनियमा क्लृप्तमध्वमारुममभुमाः
निविघ्नयनाहर्मिकं यूनः रुदसिद्धय ॥ वृद्धत्वधादिसुलकः वजसुलमद्रुहमिनिः यस्यसिद्धिज्जायतः यस्ययायामहा ॥ विघ्नविनायकाः अयि
॥ मुख्यवामानकायिकाः ॥ नानाहयसुखीवाः ॥ सिद्धिवा मविधाविनि ॥ नस्यनास्यं नियायंतः नमहाहाहमा ॥ हाकर्मविधननः ध्रुवमासुसिद्ध
या ॥ दवनामहागुहियनरुकिक्लनन ॥ ३० ॥ यदवदायादः इलांगुननमस ॥ नस्यनिगुदस्यसिन्ः याचिकत्तगदादिकः यनवकाविनः





॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥